राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 43 ■ अंक 04 ■ दिसम्बर 2021 ■ `10 ■ पृष्ठ 36

75

स्वाधीनता का अमृत महोत्सव

स्त्री शक्ति दिवस की झलकियां

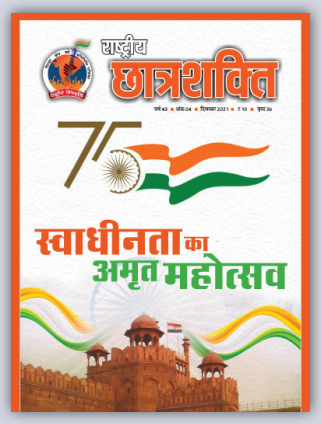

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 43, अंक 04
दिसम्बर , 2021

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 भारतीय स्वातंत्र्य समर का पुनरावलोकन

आज भारत औपनिवेशिक दासता से मुक्ति का पर्व मना रहा है। समारोहों की इस श्रृंखला के बीच जहां स्वतंत्र भारत की 75 वर्षों की यात्रा का मूल्यांकन होगा वहीं इसे पाने के...

संपादकीय	04
FREEDOM STRUGGLE IN KERALA	07
जनजातीय गौरव दिवस के मायने	13
1855 में संथाल परगना से जगी थी स्वाधीनता की अलख	15
DR.CHHAGANBHAINANJIBHAI PATEL AND NIDHITRIPATHI RE–ELECTED AS NATIONAL PRESIDENT AND NATIONAL GENERAL SECRETARY OF ABVP	17
आजादी के ज्ञात–अज्ञात हुतात्माओं से जन–जन को कराना होगा परिचित : श्रीनिवास	18
KARTHIKEYANGANESAN OF VILLUPURAM (TAMIL NADU) AWARDED THE PRESTIGIOUS PROF. YESHWANTRAOKELKAR YOUTH AWARD 2021	19
स्वतंत्र एवं सशक्त भारत की बुनियाद में वैज्ञानिकों का योगदान	20
अभाविप ने रानी लक्ष्मीबाई को किया स्त्री शक्ति के रूप में याद, देशभर में आयोजित किये कार्यक्रम	24
हि.प्र. केंद्रीय विवि छात्र परिषद चुनाव में बजा अभाविप का डंका, सभी 19 पदों पर हुई जीत	25
THINK INDIA LAW SUMMIT 2021 SUCCESSFULLY CONDUCTED	26
गुजरात: स्वयंसिद्धा के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं छात्राएं	27
छात्रशक्ति को संस्कार देने का केन्द्र है अभाविप – सुनील आंबेकर	28
अभाविप के हुंकार के बाद झूकी सरकार, मंडी में सरदार पटेल विश्वविद्यालय बनाने की दी मंजूरी	29
बिहार के विश्वविद्यालयों में व्याप्त शैक्षणिक अराजकता एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभाविप की हुंकार	30
संस्कारों की विद्यापीठ है विद्यार्थी परिषद – नितिन गडकरी	32
सनातक संस्कृति की वाहक है जनजातीय परंपरा : प्रफुल्ल आकांत	33

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

भारत ब्रिटिश दासता से मुक्ति के 75 वर्ष के समारोह का आयोजन करने जा रहा है। 15 अगस्त 1947 का दिन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है जब सैकड़ों वर्षों के निरंतर संघर्ष और दासता के अंधकार को चीर कर स्वतंत्रता का सूर्योदय हुआ था। भारतीय नेतृत्व के हाथ में सत्ता की बागडोर आयी थी। हर भारतीय का सपना पूरा हुआ था।

स्वतंत्रता के सूर्य को विभाजन का ग्रहण लग चुका था। जिस सिंधु के तट पर भारत की संस्कृति पल्लवित हुई, जहाँ उसके जीवन मूल्य गढ़े गये, जिस रावी के तट पर पूर्ण स्वराज्य का संकल्प लिया गया, उसका एक बड़ा भाग भारत में नहीं था। जिस स्व के लिये पीढ़ियों तक लाखों लोगों ने बलिदान किये उसे बाँट कर स्वतंत्रता और स्वराज पाने का प्रयास अधूरा और एकांगी बना रहा। राजनैतिक सत्ता प्राप्त हुई किन्तु सांस्कृतिक वितान छीजता चला गया।

हिमालय और सागर के मध्य स्थित इस भारत वर्ष की रचना प्रकृति ने की है। शासन व्यवस्थाएं बदलती रहीं किन्तु इस भू-भाग की सांस्कृतिक चेतना निरंतर अक्षुण्ण बनी रही। राजनैतिक रूप से कभी किसी चक्रवर्ती सम्राट का पूरे भारत पर शासन रहा तो कभी केन्द्रीय सत्ता के अभाव में छोटे-छोटे राज्य अस्तित्व में आये। किन्तु जिस तत्व को मनीषियों ने राष्ट्र की चिति के रूप में पहचाना उसके प्रति पूरे देश का भाव सदा समान रहा। इसने ही देश की सांस्कृतिक एकात्मता को कभी कमजोर नहीं होने दिया।

अंग्रेजों ने भारत की इस अंतर्निहित शक्ति को पहचाना और ब्रिटिश शिक्षा पद्धति से निकले लोगों के मन में इस सनातन के प्रति अवहेलना और तिरस्कार का भाव भरा। भारतीय ज्ञान परम्परा प्रतिगामी और आजीविका देने में अक्षम है, इस धारणा ने शिक्षा के परम्परागत स्वरूप को हाशिये पर धकेल दिया। इसके साथ ही भारतीय मूल्य व्यवस्था, स्वत्व की अनुभूति और उसके रक्षण के लिये प्राण-पण से संघर्ष का संकल्प भी जीवन से तिरोहित होता चला गया।

शताब्दियों तक बर्बर आक्रमणों का सामना राष्ट्र ने जिस प्रेरणा के बल पर सफलतापूर्वक किया था, स्व की वह प्रेरणा यूरोपीय संस्कारों में पले-बढ़े तत्कालीन नेतृत्व के मानस से ओझल हो गयी। ब्रिटिश शासकों ने योजनापूर्वक अपने लिये अनुकूल नेतृत्व गढ़ा था परिणामस्वरूप, देशभक्ति और समर्पण में रंचमात्र कमी न होने बाद भी वह नेतृत्व भारत की आत्मा से साक्षात्कार करने में असफल रहा और पश्चिम की मोहक शब्दावली और आयातित विचारों को भारत की धरती पर रोपने की कोशिश करता रहा।

स्वतंत्रता का प्रश्न केवल विदेशियों के चले जाने भर से हल होने वाला नहीं था। यह तो भारतीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रश्न था जिसके लिये भारत की समझ आवश्यक थी, उसकी ज्ञान परम्परा में अभिनिवेश आवश्यक था। जब तक भारतीय समाज का नेतृत्व करने वाले महापुरुषों द्वारा स्व की चेतना को संघर्ष की कसौटी बनाये रखा गया, स्वतंत्रता के लिये बलिदानों की अटूट श्रंखला बनी रही। इस स्वतंत्रता में स्वधर्म, स्वराज्य और स्वदेशी की त्रयी आधारभूत थी। समर्थ रामदास से लेकर लोकमान्य तिलक तक स्वराज्य की यह अवधारणा सर्वत्र परिलक्षित होती है। यहाँ तक कि द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जब नेताजी सुभाष ने अण्डमान-निकोबार द्वीपों पर नियंत्रण प्राप्त किया तो उन्हें क्रमशः स्वतंत्र और स्वराज द्वीप नाम दिया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के लिये समझौते नहीं, संघर्ष हुआ करते हैं, बलिदान हुआ करते हैं।

इस मौलिक समझ और भारतीयता मेंअभिनिवेश के अभाव में समझौतों के द्वारा किस्तों में स्वतंत्रता प्राप्त करने को राजनैतिक विजय के रूप में प्रस्तुत किया गया और इसके लिये भारत विभाजन की कीमत चुकाने में संकोच नहीं हुआ। अंग्रेजों की लिखी पटकथा को अपनी जीत का दस्तावेज मानते हुए, ब्रिटिश संसद में पारित प्रस्ताव के परिणामस्वरूप हुए सत्ता हस्तांतरण को लालकिले की प्राचीर से नियति से साक्षात्कार कह कर संबोधित किया गया।

निस्संदेह यह वह स्वराज नहीं था जिसके लिये सैकड़ों वर्षों तक संघर्ष और लाखों बलिदान हुए थे। लेकिन यह स्वातंत्र्य संघर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिससे आगे की यात्रा इस राष्ट्र को करनी थी। आन्तरिक व वैश्विक परिस्थिति चाहे अनुकूल रही हो अथवा प्रतिकूल, देश धीमी गति से ही सही, किन्तु दृढ़ कदमों से स्वराज के उदात्त लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा। इसका ही परिणाम है कि भारत आज विश्वमालिका में अपना यथोचित एवं स्वाभाविक स्थान प्राप्त करने की ओर तेजी से अग्रसर है। यह संतोष का विषय है कि देश की युवा पीढ़ी स्वत्व की खोज में है और अपनी जड़ों की तलाश की बेचैनी उसमें साफ देखी जा सकती है।

1947 में औपनिवेशिक शक्तियों से मिली स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने का यह अवसर इस यात्रा के सिंहावलोकन करने तथा स्वत्व के प्रकाश में स्वधर्म, स्वराज और स्वदेशी की संस्थापना हेतु संकल्प का प्रसंग है।

युवा दिवस और गणतंत्र दिवस की शुभकामना सहित,

आपका
संपादक

भारतीय स्वातंत्र्य समर का पुनरावलोकन

| दत्तात्रेय होसबले |

आज भारत औपनिवेशिक दासता से मुक्ति का पर्व मना रहा है। समारोहों की इस श्रृंखला के बीच जहां स्वतंत्र भारत की 75 वर्षों की यात्रा का मूल्यांकन होगा वहीं इसे पाने के लिये चार शताब्दी से अधिक के कालखण्ड में निरंतर चले संघर्ष और बलिदान का पुण्यस्मरण भी स्वाभाविक ही है।

भारत में औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध चला राष्ट्रीय आन्दोलन "स्व" के भाव से प्रेरित था जिसका प्रकटीकरण स्वधर्म, स्वराज और स्वदेशी की त्रयी के रूप में पूरे देश को मथ रहा था। संतों और मनीषियों के सान्निध्य से आध्यात्मिक चेतना अंतर्धारा के रूप में आंदोलन में निरंतर प्रवाहित थी।

युगों-युगों से भारत की आत्मा में बसा "स्व" का भाव अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ प्रकट हुआ और इन विदेशी शक्तियों को पग-पग पर प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। इन शक्तियों ने भारत की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक व्यवस्था को तहस-नहस किया, ग्राम स्वावलम्बन को नष्ट कर डाला। विदेशी शक्तियों द्वारा यह सर्वंकश आक्रमण था जिसका सर्वतोमुख प्रतिकार भारत ने किया।

यूरोपीय शक्तियों के विरुद्ध भारतीय प्रतिरोध विश्व इतिहास में अनूठा उदाहरण है। यह बहुमुखी प्रयास था जिसमें एक ओर विदेशी आक्रमण का सशस्त्र प्रतिकार किया जा रहा था तो दूसरी ओर समाज को शक्तिशाली बनाने के लिये इसमें आई विकृतियों को दूरकर सामाजिक पुनर्रचना का काम जारी था।

देशी रियासतों के राजा जहां अंग्रेजों का अपनी शक्ति भर प्रतिकार कर रहे थे वहीं अपने सहज-सरल जीवन में अंग्रेजों के हस्तक्षेप और जीवनमूल्यों पर हमले के विरुद्ध स्थान-स्थान पर जनजातीय समाज उठ खड़ा हुआ। अपने मूल्यों की रक्षा के लिये जाग उठे इन लोगों का अंग्रेजों ने क्रूरतापूर्वक नरसंहार किया किन्तु वे संघर्ष से पीछे नहीं हटे। 1857 में हुआ देशव्यापी स्वातंत्र्य समर इसका ही फलितार्थ था जिसमें लाखों लोगों ने बलिदान दिया।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था को नष्ट करने के प्रयासों को विफल करने के लिये काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, शांति निकेतन, गुजरात विद्यापीठ, एमडीटी हिन्दू कॉलेज तिरुनेलवेल्ली, कर्वे शिक्षण संस्था व डेक्कन एज्यूकेशन सोसाइटी तथा गुरुकुल कांगड़ी जैसे संस्थान उठ खड़े हुए और छात्र-युवाओं में देशभक्ति का ज्वार जगाने लगे। प्रफुल्लचन्द्र राय और जगदीश चंद्र बसु जैसे वैज्ञानिकों ने जहाँ अपनी प्रतिभा को भारत के उत्थान के लिये समर्पित कर दिया वहीं नंदलाल बोस, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर और दादा साहब फाल्के जैसे कलाकार तथा माखनलाल चतुर्वेदी सहित प्रायः सभी राष्ट्रीय नेता पत्रकारिता के माध्यम से जनजागरण में जुटे थे। अपनी कलाओं के माध्यम से देश को जगा रहे थे। महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और महर्षि अरविन्द आदि अनेक मनीषियों की आध्यात्मिक प्रेरणा इन सबके पथप्रदर्शक के रूप में कार्यरत थी।

बंगाल में राजनारायण बोस द्वारा हिन्दू मेलों का आयोजन, महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक द्वारा गणेशोत्सव और शिवाजी उत्सव जैसे सार्वजनिक कार्यक्रम जहाँ भारत की सांस्कृतिक जड़ों को सींच रहे थे वहीं ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारक महिला शिक्षा और समाज के वंचित वर्ग को सशक्त करने के रचनात्मक अभियान में जुटे थे। डॉ

अम्बेडकर ने समाज को संगठित होने और सामाजिक समानता पाने के लिये संघर्ष करने का मार्ग दिखाया।

भारतीय समाज जीवन का कोई क्षेत्र महात्मा गाँधी के प्रभाव से अछूता नहीं था। वहीं विदेशों में रह कर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को धार देने का काम श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल और मादाम कामा जैसे लोगों के संरक्षण में प्रगति कर रहा था। लंदन का इंडिया हाउस भारत की स्वतंत्रता संबंधी गतिविधियों का केन्द्र बन चुका था। क्रान्तिवीर सावरकर द्वारा लिखा गया 1857 के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास भारतीय क्रांतिकारियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय था। स्वयं भगत सिंह ने इसे प्रकाशित करा कर इसकी सैकड़ों प्रतियाँ वितरित कीं।

देश भर में सक्रिय चार सौ से अधिक भूमिगत संगठनों में शामिल क्रांतिकारी अपनी जान हथेली पर लेकर भारतमाता को मुक्त कराने के अभियान में लगे थे। बंगाल के क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति की गतिविधियों में सक्रिय डॉ. हेडगेवार लोकमान्य तिलक की प्रेरणा से कांग्रेस से जुड़े और सेन्ट्रल प्रोविंस के सचिव चुने गये। 1920 में नागपुर में सम्पन्न राष्ट्रीय अधिवेशन की आयोजन समिति के वे उप-प्रधान थे। इस अधिवेशन में उन्होंने अपने साथियों के साथ पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित कराने के भरसक प्रयत्न किये किन्तु कांग्रेस नेतृत्व इसके लिये तैयार नहीं हुआ। अंततः यह प्रस्ताव आठ वर्ष बाद लाहौर में पारित हो सका।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व संभाला। उनके नेतृत्व में न केवल स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार का गठन हुआ अपितु आजाद हिन्द फौज ने पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों को स्वतंत्र कराने में सफलता भी प्राप्त की। लाल किले में आजाद हिन्द फौज के अधिकारियों पर चले मुकदमे ने पूरे देश को रोष से भर दिया। इसके साथ ही नौसेना द्वारा ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध किये गये विद्रोह ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिये विवश कर दिया।

स्वतंत्रता का सूर्य उगा, लेकिन विभाजन का ग्रहण उस पर लग चुका था। कठिन परिस्थिति में भी आगे बढ़ने का हौंसला बना रहा, इसका श्रेय प्रत्येक भारतीय को जाता है जिसने सैकड़ों वर्षों की राष्ट्रीय आकांक्षा को पूर्ण करने के लिये अपना खून-पसीना बहाया।

महर्षि अरविन्द ने कहा था – भारत को जागना है, अपने लिये नहीं बल्कि पूरी दुनियाँ के लिये, मानवता के लिये। उनकी यह घोषणा सत्य सिद्ध हुई जब भारत की स्वतंत्रता विश्व के अन्य देशों के स्वतंत्रता सेनानियों के लिये प्रेरणा बन गयी। एक के बाद एक, सभी उपनिवेश स्वतंत्र होते चले गये और ब्रिटेन का कभी न छिपने वाला सूर्य सदैव के लिये अस्त हो गया।

पुर्तगाली, डच, फ्रेंच तथा सबसे अंत में ब्रिटिश भारत आये। सभी ने व्यापार के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को नष्ट करने तथा मतान्तरण करने के निरन्तर प्रयास किये। औपनिवेशिकता के विरुद्ध प्रतिकार उसी दिन प्रारंभ हो गया था जिस दिन पहले यूरोपीय यात्री वास्को-दा-गामा ने वर्ष 1498 में भारत की भूमि पर पाँव रखा। डचों को त्रावणकोर के महाराजा मार्तण्ड वर्मा के हाथों पराजित होकर भारत छोड़ना पड़ा। पुर्तगाली गोवा तक सिमट कर रह गये। वर्चस्व के संघर्ष में अंततः ब्रिटिश विजेता सिद्ध हुए जिन्होंने अपनी कुटिल नीति के बल पर भारत के आधे से कुछ अधिक भाग पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। शेष भारत पर भारतीय शासकों का आधिपत्य बना रहा जिनके साथ अंग्रेजों ने संधिया कर लीं। स्वतंत्रता के पश्चात इन राज्यों के संघ के रूप में भारतीय गणतंत्र का उदय हुआ।

भारत ने लोकतंत्र का मार्ग चुना। आज वह विश्व का सबसे बड़ा और सफल लोकतंत्र है। जिन लोगों ने भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिये स्वतंत्रता के आन्दोलन में अपना योगदान किया, उन्होंने ही भारत के लिये संविधान की रचना का कर्तव्य भी निभाया। यही कारण है कि संविधान की प्रथम प्रति में चित्रों के माध्यम से रामराज्य की कल्पना और व्यास, बुद्ध तथा महावीर जैसे भारतीयता के व्याख्याताओं को प्रदर्शित कर भारत के सांस्कृतिक प्रवाह को अक्षुण्ण रखने की व्यवस्था की गयी।

"स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव" का यह अवसर उन बलिदानियों, देशभक्तों के प्रति कृतज्ञताज्ञापन का अवसर है जिनके त्याग और बलिदान के कारण ही हम स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जागतिक समुदाय में अपना यथोचित स्थान प्राप्त करने की दिशा में बढ़ रहे हैं। उन अनाम वीरों, चर्चा से बाहर रह गयी घटनाओं, संस्थाओं और स्थानों, जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन को दिशा दी और मील का पत्थर सिद्ध हुईं, का पुनरावलोकन, मूल्यांकन तथा उनसे जुड़ी लोक स्मृतियों को सहेज कर उन्हें मुख्यधारा से परिचित कराना होगा ताकि आने वाली पीढ़ियां जान सकें कि आज सहज उपलब्ध स्वतंत्रता के पीछे पीढ़ियों की साधना, राष्ट्रार्चन के लिये शताब्दियों तक बहाये गये अश्रु, स्वेद और शोणित का प्रवाह है। ■

(लेखक वर्तमान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह है)

Freedom struggle in Kerala

(Up to 1911)

Introduction

Southern most part our country, especially Kerala was well integrated into the ancient trade network since the first millennium of BCE. Traders from various parts of the world came to this part of the country in search of spices and other commodities. People also came through these trade routes to get away from religious persecution and settled in Kerala, for example Jews and some sections of Christians. Most probably, in the middle Ages, the Arabs become a significant factor of this trade network, owing to their geographical position, and seafaring communities. Through, Arab traders Islam also reached the shores of Malabar, and gained foothold in many places like, Calicut, Kodungalore etc. The arrival of Portuguese in India, in search of spices and with a religious mission transformed the socio, cultural, economic and political dynamics this area forever. At the time of Portuguese arrival, Kerala was divided into various small kingdoms and principalities. Among these, Kolathiri of north, Samorin of Calicut, Cochin in the middle and Travancore in the south were the main rulers. Though, there were wars between these kingdoms and principalities in the name petty differences, conflicts in the name of religion were almost unknown. The arrival of Portuguese and their conflict with Muslims marked the beginning of conflicts motivated by religion. This new ingredient of war not only altered the existing equilibrium in the region but also pushed it to slavery.

The Portuguese

The struggle against foreign powers in the western coast of India started as soon as the arrival of Portuguese on the shores of Calicut in 1498 CE. Vasco Da Gama was the leader of Portuguese expedition. He came with two ships and he was on board of ship named St. Gabriele. The aim of Portuguese expedition was not only a commercial one but it also had a religious mission. On 8th January 1454 CE Pope Nicholas V, granted a papal bull to Affonso V, the king of Portugal an exclusive right to all countries that might be discovered by his subjects between west coast of Africa and the continent of India. Papal assent to conquering new lands for Christendom was the essence of this papal bull.

Before the arrival Portuguese, trade between India and Europe was predominantly in the hands of Arabs-Muslims. Hence, when Portuguese came to coast of Malabar the Muslims considered it as a threat to their monopoly. Therefore, they instigated Zamorin the ruler of Calicut against the Portuguese and asked him not to trade with them. This Muslim behavior and the doubts of Da Gama about the Muslim designs led to conflicts between Zamorin and Portuguese. Though, there were intermittent intervals this conflict continued almost 165 years, till the closure of Portuguese era in Malabar.

Like elsewhere, under the Portuguese patronage the religious policies adopted by Jesuits in Kerala were arbitrary. The main problem with conversion of Hindus was the question on sovereignty. The converted people considered themselves as the subjects of Portuguese and refused to submit to the law of the land. Nevertheless, the revolt of a group of native Christians against the imposition of Latin tradition and establishment of a new church named Malankara church in 1653 CE is also an interesting episode this era.

The Dutch

The dawn of Dutch ascendency in Malabarbegin with their capture of fort of Cochin from the Portuguese in 1663. And the decline of Dutch power in Malabar is marked from the conclusion of treaty of Mavelikkara in 1753 CE. Marthanda Varma the king of Travancore inflicted the first and decisive blow on Dutch power in Malabar and the English inflicted the final blow. Though

there was a tactical bonhomie with Dutch for some time, the Zamorins of Calicut who fought against the Portuguese for more than hundred years also fought against the Dutch to emphasis their sovereignty.

Marthanda Varma

Marthanda Varma is regarded as the builder of modern Travancore. He ascended the throne in the year 1729 CE. Immediately after his ascendency he started consolidating his power and expansion of Travancore. As part of this move he annexed many petty principalities and vassalages into Travancore. He was a statesman and never allowed foreigners to interfere in the native affaires. As part of his consolidation process when he decided to go to war with Kayamkulam, the Dutch Governor, M A. Maten sent a messenger to the Maha Raja asking him not attack Kayankulam. The Maha Raja sent a reply with the same messenger to Maten stating that the Dutch East India Company should restrict their interest in commercial prosperity of the company and they need not to interfere in the internal affairs of Travancore. At the same time English of Anjango factory offered their support and men for the expedition of Maha Raja against Kayamkulam but he politely declined their offer. In 1739 CE when the Travancore forces marched against Kayamkulam the Dutch Governor of Ceylon M. VanImhoff come to meet the Maha Raja, during his conversation VanImhoff threatened with an invasion of Tavancore. To this the Maha Raja calmly replied that he is free to do so. Maha Raja also told that even if the Dutchsucceed in invading his kingdom, it has vast area of forest and he will retreat there safely. To this VanImhoff scornfully reacted that the Dutch could follow him wherever he went. Closing his conversation with VanImhoff, the Maha Raja told that if the Dutch implement their threat then he would think of invading Europe with his native boats. In 1741 CE VanImhoff installed Rani of Elayidath Swaroopam as sovereign of the state. Hence, the Travancore army under the instruction from Maha Raja marched against the allied forces of Dutch and Elayidath Swaroopam. The Travancore army vanquished the enemy and killed many Dutch soldiers. Travancore army also attacked and destroyed Dutch-posts and factories. Following this, the Rani and the Dutch fled to Cochin.

At the same time,while Travancore army was on the north,a fleet of Dutch army from Ceylon landed at Colachel, in the southern flank of Travancore and commenced attacking villages and small-garrisons posted there. They committed many atrocities and plundered all the valuables from the bazaars and houses. On receiving this intelligence the Maha Raja immediately marched to Colachel from Trivandrum with all the force at his command. He also directed Rama Iyen Dalawah who was engaged at north, to march with a sufficient force and join him at Padmanabhapuram. Rama Iyen Dalawah reached Kuculam with sufficient reinforcement, including infantry, cavalry and artillery. In the mean time Travancore army also arranged sufficient number of Munchees (native boats) for naval action. On 10th August the Travancore army commenced the attackon Dutch and the Maha Raja has conducted the war in person. First the Munchees surrounded the Dutch ships and engaged in battle. Following this the Travancore army under Rama Iyen charged the Dutch lines and broken it. The Dutch army withdrew to Colachel fort leaving behind the dead, wounded and prisoners. On 14 August Travancore army enforced siege on Colachel fort, within few hours the fort was captured and enemies were driven out. The defeated Dutch then sailed to Cochin. This war at Colachel marked the end of Dutch supremacy in the Indian Ocean.

The English

The English arrived in Malabar in the year 1615 CE. Captain Keeling with three ships reached Kodungalore (Cranganore)and entered into a treaty with the Zamorin of Calicut. In their Initial years they established small factories at Ponnani and Calicut, but the Zamorins were not in favor of foreign settlements. Hence, later the English moved to other places and established factories at Trvanccore, Anjengo and Tellicherry in between 1684-99.Like their predecessors, by 1721 CE the English also started

their active interference in the native politics. But the initial reaction was fierce; a delegation led by companies Anjengo chief Gyfford were cut down. In 1729 Marthanda Varma ascended the throne in Travancore. While consolidating his power, he fought against the Dutch, with a tacit support of English. The following years English slowly consolidated their power in various parts of Southern India. In 1766 CE, Haidar Ali invaded Calicut and ravaged the kingdom of Zamorin, thus inaugurated an era of chaos in that part of Malabar. After Haidar, his son Tippu unleashed a reign of terror on people of Malabar. Following, the treaty ofSrirangapatanam 1792 CE, with Tippu the English announced that whole of Malabar ceded to them. This arbitrary attitude sowed the seeds of future conflict in Malabar.

Pazhassi Raja

Kerala Varma Raja (Pazhassi) as he was knownbecomes an embodiment of unrest among native people and their resistance against English rule. He was a natural leader and the legitimate king of Kottayam in north Malabar, belonging to the western branch of Kottyam royal family. After the Srirangapattanam treaty of 1792 CE the English bypassed his authority in favor his uncle. Not only this hurt the self esteem of Pazhassi, but it also re-kindled his quest for freedom, since he was not ready compromise on his sovereignty. In fact, that was the reason why he continued his fight during 1787 to 1790 against Tippu, even after withdrawing to woods. Therefore, when Pazhassi drew his sword against the English, he had this experience. Using his influence in the kingdom he organized resistance. With the support of local people, from the deeps of Western Ghats also organized skirmishes and perplexed the English. They lost lot many men in this engagements in 1797 CE one engagement alone they lost more than 1000 people. After, this incident the commander-in-Chief of English army visited Malabar and arranged for a treaty with Pazhassi. Following this there was a brief period of peace. Two years later after the fall of Tippu, when the English challenged his sovereignty, Pazhassi revolted again. In 1800 CE the English even brought Colonel Arthur Wellesley, later the duke of wellington (Who defeated Napoleon) to subdue Pazassi but he too failed in front of him. Nevertheless, ultimately they succeeded in eliminating him in 1805 CE, that too by means of treachery. In his letter to the Malabar collector,Babrer the sub collector of Malabar who led the team that killed Pazhassi mentionshim as natural chief of the countryand as wonderful persona. The role played by hill tribes like Kruchiyar's and Kurumabar's in the resistance of Pazhassi Raja is a vibrant part of our freedom struggle.

Velayudhan Chempakaraman Pillai (Velu Thamby Dalawah)

Velu Thamby rose to prominence when he opposed the tyranny of Jayanthan Sankaran Nampoodiri, the prime minster (Dewan) of Travancore. Nampoodiri become prime minister of Travancore after the mysterious death of Dewan Raja Kesavadas, an able administrator. The new prime minister unleashed a reign of terror and started literal extortion in collusion with some others like Mathu Tharakan a Syrian Christian. As part of this extortion the Nampoodiri also summoned Velu Thamby an Ex-Tahasildar and demanded for an immediate payment of some 3000 rupees. He even threatened Thamby with punishment if not complied with. Thamby was a bold young man with good intelligence, belonging to a respectable family. He told the Nampoodiry that he has no money in his hand and he will go back to Nanjenadu and arrange the money lieu in his name in three days. Nampoodiri accepted this proposal, but made Thambyto sign a promissory note in this effect before he allowed leaving.

Immediately after reaching his place Velu Thamby arranged for a council to discuss about the extortion and tyranny of Nampoodiry. People from across Travancore participated in this council and decided to revolt against the tyrants. On receiving intelligence on the mobilization by Thamby the Nampoodiry gave orders for his apprehension. The proclamation prompted Thamby and others to march towards Trivandrum fort. When they reached the fort people from north was already there. Due to

their reverence for Maha Raja the party under Velu Thamby did not force to enter the fort. But, a perplexed Maha Raja immediately sent a team to meet the aggravated people. As the leader of the group Velu Thamby demanded the following things. First dismissal of Jayanthan Nampoodiry from the post of prime minister and his banishment, second punishment for his co-culprits, Sankara Narayanan and Mathu Tharakan and thirdly concession on taxes. The Maha Raja immediately accepted these demands. As demanded the Nambudiry and his co-culprits were handed over to the assembly. The assembly under Thamby formed a court and conducted summery trail and punished the extortionist gang.

Following this incident, Velu Thamby and, Chempka Raman Pillay met the Maha Raja.After their interview with the Maharaja Chempaka Raman Pillay assumed charge as prime minister and Velu Thamby as commerce minister. Later in 1801 after the demise of Chempaka Raman Pillay, Velu Thamby assumed charge as prime minister of Travancore.Velu Thamby was a man of extraordinary ability and talent; he was also bold and daring. As honest officer his actions were always directed to promote the public interest. After assuming charge Prime minister at once he brought order in the kingdom. He almost eradicated corruption in the government system. He is known for implementing severe punishments mitigate delinquency.

As prime minister of Travancore, in the initial days Velu Thamby had a cordial relation with the English, particularly with Colonel Colin Macaulay, the resident. But, when Macaulay started excessive interference in the internal matters of the kingdom and tried to financially burden it, they fell apart. Following, this the resident tried to remove Velu Thamby from his post, which widened the gap between them. At the same time the prime minister of Cochin Paliyath Atchen was also angry with Macaulay due to his interference in the internal affairs of Cochin. As a result both the Dewans of Travancore and Cochin consulted each other and decided to teach the English a lesson. On 11 January 1809 CE, Velu Thamby made a proclamation, later known as Kundara proclamation. In this proclamation he enumerated the evil design of English and its dangers pertaining to Travancore. Following this a revolt took place against the English stationed at Quilon. The followers of Velu Thamby also engaged with the English in elsewhere the kingdom. Nevertheless, unfortunately, the English suppressed the revolt of Travancore populace led by Velu Thamby Dalawah. Following this defeat he retreated to forest and later reached a place named Mannady. The English announced a reward for his apprehension. The new Dalawah of Travancore colluded with English to capture him and dispatchedofficers in this regard. In this juncture, Velu Thamby and his brother took refuge in Bhagavati temple at Mannady. To avoid capture and disgrace Valu Thamby decided to end his life. He asked his brother to stab him but his brother refused to do so. When the Dalawah plunged dagger to his own bosom and asked to cut his neck his brother complied with, and in one stroke severed the neck from the body. By that time, the pursuers reached the temple but they found only the lifeless bodies of Dalawah and his brother. The bodies Velu Thamby his brother later sent to Trivandrum and displayed there in a humiliating manner.

Paliath Achan

Paliath Achans were the hereditary chief ministers of Cochin. After the demise of then Paliath Achen in 1779 CE, Shaktan Tampuran then king abolished the hereditary chief minister ship, since the senior Acchan at that time was a boy. When the boy grew up, he made some attempts to gain his lost position but without success. Nevertheless, after the demise of Shaktan Tampuran, his cousin becomes the king, and thenthe Dalawah of Travancore Velu Thambyexerted his influence and appointed Achan as chief minister of Cochin. The Achan was a man of ability and Velu Thamby was his role model. During the following period the insolence behavior of the English at Cochin grew particularly the arrogance their resident C. Macaulay. In this period the Achan consulted with Velu Thamby Dalawah and devised a joint operation to expel the English. In order to execute their plan they also consulted with the

Zamorin and the French.Though, Achan urged the Raja of Cochin to join hand with Travancore and French for the purpose of expelling English from the country. The Raja of Cochin was against any open rupture with English. In spite of his support, the confederate recruited personnel from both the states and quietly trained them for future action. Achan raised around three to four thousand men for action. Due to his opposition to the revolt the Raja was moved to a village named Vellarapilli and confined there. Almost the same time resident Macaulay given refuge to one Kunji Krishna Menon a subject of Cochin, Achan asked Macauly to hand over his subject immediately but he refused to oblige, this become an immediate reason for rupture. Thereupon, on 28th December 1808 CE, six hundred men commanded by Achan and two of the officers of Velu Thamby Dalawah surrounded the house of resident and tried to capture him. In this process they over powered the English soldiers and pillaged the building. But, unfortunately Macaulay and Menon escaped unhurt to an English ship with help of a Portuguese aid. On 19th January 1809 CE, the combined force of around 3000 men commanded by Achan attacked Cochin but failed to get any headway. Two days later they also attacked Dutch Governors house and destroyed it. On 25th January they mounted another attack on the English but there were no significant gains. By this time the English mobilized a large troop to handle the situation. Owing to the failures of their efforts Achan and his men were in a disheartened state. The English understood this situation and offered peace, security and honour on a condition that Achan will not be allowed to reside at Cochin. Achan accepted this offer and made his surrender on 27 February 1809 CE. With the surrender of Paliath Achan the insurrection collapsed so far as Cochin is concerned. The English first confined Achan at Madras and later moved to north but never allowed to visit Cochin again. He breathed his last in Varanasi.

Vycome Padmanabha Pillay

Vycome Padmanabha Pillay was a close confident and intimate friend of Velu Thamby Dalawah. He was also the general of the army of Velu Thamby Dalawah. He is considered as a hero of Travancore's war against Tipu, due his exploits in the battles against Mysore army. On the beginning of the revolt against English, under his leadership only Travancore forces clandestinely reached Cochin and joined with Paliath Achan. The combined force then carried out the attack on the house of resident Macaulay and the English force on 28th December 1808. Later the force under his command ambushed a party of British near Alleppy, and decimated them. In 1809 the English captured him and hanged for his role in the revolt.

Chembil Arayan (Anantha Padmanabhan Valiya Arayan)

Chembil Arayan was the admiral of the fleet in service of the Maharaja of Travancore. In 1808 during the revolt against English he was the commander of the fleet that attacked the house of resident Macaulay under Paliath Achan and Vaikom Padmanabha Pillai. His fleet was consisted of small boats. Before the attack under him theboats were covered toconceal the soldiers, and reached Cochin, clandestinely.

Kurichiya Revolt

The Kurichiya's are a tribe belongs to the Western Ghats region of Kerala. They are also known as malai Brahmins. The Kurichiya's were skillful archers. This community played a vital role in the resistance organized by Pazhassi Raja against the English. After the demise of Pazhassi Raja in 1805 CE, the English become vindictive towards the tribes. Therefore, they continued their exploitation, plunder and harassment of people belongs to the hill tract. The Englishalso fixed taxes arbitrarily, and demanded it in the form of money, the tribes were engaged in barter system, the new demand made their lives unbearable. Hence in April 1812 CE, the Kurichya'sand another tribe named Kurumba's rose in revolt. The tribal people were experts in guerrilla warfare. They, attacked the English garrisons and offices, and also blocked the routs to hinder the troop movement. Within couple of days many revenue officials and police personnel's also joined with them and it become a mass movement against the English.

Considering the gravity of the situation the English East India Company mobilized troops from various places like Mysore and suppressed the insurrection. Later, the English captured those participated in the revolt, and confiscated their lands, they even made them slaves.

A Sankara Iyer (Sankaraiah)

A Sankara Iyer or Sankaraiah as he was known was the Dewan of Cochin. He was a Tamil Brahmin, after his studies at Presidency College in Madras, for some time he worked as lecturer and a legal practitioner later he joined the Cochin government service. In 1880 he started an organization named Hindu Sabha in Cochin.The Sabha through it branches sought to promote social and religious reforms among Hindus with support of pundits and priests of social standing and eliminate the dogmas, schisms and practices opposed to the consolidation of Hindu nation. To achieve these objectives he also published a journal named 'Hindu Reformer and Politician'. This was the organ of Hindu Sabha. He was a close friend of the founder's Theosophical society madam Blatvasky and Colonel Olcot. In 1892 when Sankaraiah was the acting Dewan of Cochin, Swamy Vivekananda visited him with a letter from Sheshadri Iyer, the Dewan of Mysore, and stayed in his house as guest. The novel ways he adopted to express his resentment against colonial rulers are interesting episodes of our forgotten history.

Neelakanta Brahmachari

Neelakantan (Neelakanta Brahmachary) as he was known was revolutionary. He was an associate of VVS Iyer and part of a secret organization named Bharat Mata Association. In June 1910 Neelakantan visited Cochin and Alapuzha along with his associate Sankaranarayanan. All these places, Neelakantan delivered lectures on Swadeshi and boycott, he also stressed on the evils of foreign rule. Harihara Iyer who met Neelakantan at Alapuzha become an ardent admirer of Nelakantan, and extended some financial help to the noble cause. Later in his letter to Vanchi Iyer he described Neelakantan as first born son of Bharat Mata. From Alapuzha Neelakantan and Sankaranarayanan went to Punalur and from there they went to Senkotai. The members of Bharat Mata association later assassinated collector Ashe at Tirunelvelly.

Vanchinathan

Vanchi Iyer, better known as Vanchinathan come in the contact of Neelakanta Brahamachari when he organized Bharat Mata Association. Vanchi Iyer was working in the Punalur forest office when he met Neelakantan. Later, he becomes an active associate of Neelakantan and Bharat Mata Association. As revolutionary move when the association decided to eliminate collector Ashe, Vanchinathan took the responsibility on his shoulder. On 17 June 1911, in Maniyachi railway station, while Collector Ashe was seated on his compartment in Ceylon Boat Mail, Vanchinathen entered in the compartment and fired at him. The bullet pierced right side of his chest and shortly afterwards Ashe collapsed and died. Later Vanchinathen ran to the latrine of the train and shot himself and died. In British records this incident is mentioned as Tirunelvelly conspiracy case. After independence the railway station renamed as Vanchi Maniyachi Railway station. ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' दिसम्बर 2021 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/Rchhatrashakti
www.twitter.com/Rchhatrashakti

जनजातीय गौरव दिवस के मायने

| प्रफुल्ल आकांत |

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समाज का अतुलनीय योगदान है। सैंकड़ों जनजाति बलिदानियों ने अपने प्राणों की आहूति देकर भारत को स्वतंत्रता दिलवाई है। देश की संस्कृति, धर्म और परंपराओं की रक्षा की बात की जाय तो जनजातीय समाज का स्थान अग्रिम पंक्ति में आता है। स्वाधीनता के 75 वर्ष पर भारत सरकार ने समाज की आकांक्षा और आवाज को समझकर भगवान बिरसा मुंडा की जंयती को जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। सरकार के इस निर्णय से पूरा भारतीय समाज आनंदित है। भारत सरकार के निर्णय से जनजाति समाज की गौरवशाली परंपरा, वीरता और शौर्य लोगों को जानने का मौका मिलेगा। षड़यंत्रपूर्वक जनजातियों की गौरवपूर्ण इतिहास को छिपाया गया। स्वाधीनता की लड़ाई में उनके द्वारा किये गये बलिदान, शौर्यपूर्ण संघर्ष को समाज का विद्रोह के रूप में दिखाने का प्रयास किया गया। वनवासियों को शेष भारतीय समाज से काटने लिए अनेकों षड़यंत्र रचे गये हैं।

भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में इस समाज का अमूल्य योगदान रहा है। जनजाति समाज में जन्मे भगवान बिरसा मुंडा सहित जनजाति समाज के अनेक वीरों के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि है, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।भगवान बिरसा मुंडा के साथ-साथ, सिदो-कान्हू, तिलकामांझी, नागा रानी गाइदिनल्यू, ताना भगत सुरेंद्र राय सहित अल्लूरी सीताराम राजू के योगदान को भुलाना इन महापुरुषों के प्रति अन्याय ही माना जाएगा। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संथाल विद्रोह, खासी विद्रोह, कुकणा बरुआ विद्रोह, भुटिया लेपचा मित्रों बंगाल विद्रोह, पलामू विद्रोह, खेरवाड़ा विद्रोह, संथाल हूल, टंट्या मामा विद्रोह, केरल के जनजाति किसानों की क्रांति जैसे अनेक ऐसे आंदोलन है जिन्होंने अंग्रेजी सरकार को नाकों चने चबा दिया। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम कोई क्षेत्र में कोई ऐसा जगह नहीं है जहां पर जनजातियों ने अंग्रेजों से लोहा नहीं लिया हो।

चार अप्रैल 1829 को तीरथ सिंह मुखिया के नेतृत्व में असम में खासी विद्रोह शुरू किया गया। वहीं पियालियर वरगोहाई के नेतृत्व में असम में ही फूकन और बरुआ विद्रोह किया गया। 1879 में नगा संग्राम के कारण नागालैंड में क्रांति की आग फैल गई। 1932 में नागालैंड में ब्रिटिशों के खिलाफ विद्रोह के स्वर मजबूत हो उठा, जिसका नेतृत्व महारानी गाइदिन्ल्यू ने किया। 13 वर्ष की आयु में वह अपने चचेरे भाई हाइपौ जादोनांग के हेराका धार्मिक आंदोलन में शामिल हो गईं। वो स्वतंत्रता हेतु भारत के व्यापक आंदोलन का हिस्सा थी। उन्होंने मणिपुर क्षेत्र में गांधी जी के संदेश का भी प्रसार किया।

1920 से 1931 तक बाघा जतिन और विपुल गांगुली के नेतृत्व में बंगाल (जलपाईगुड़ी, दार्जलिंग) में अंग्रेजों के विरूद्ध भूटिया लेप्चा विद्रोह किया गया। 1771 में राजा चित्रजीत सिंह और चेरो वनवासी के नेतृत्व में पलामू में जबदस्त विद्रोह हुआ। 1781 में तिलका मांझी और भागीरथ बाबा के नेतृत्व में खरवाड़ आंदोलन किया गया। 1855 – 57 संथाल परगना में सिदो, कान्हू, चांद, भैरव के नेतृत्व में सथाल हूल किया गया। 1910 के जगदलपुर विद्रोह को भला कौन भूल सकता है। 1914 में युवा जतरा ओराओं के नेतृत्व में ताना भगत का गुमला में आंदोलन हुआ। ठाकुर चेतन सिंह और युवराज विक्रम सिंह के द्वारा 1831 में छोटानागपुर में किये गये कोल विद्रोह ने अंग्रेजों को चिंता में डाल दी थीं। 1895 – 1899 तक भगवान बिरसा मुंडा

1884 में टंट्या मामा विद्रोह का मध्यप्रदेश में जबरदस्त असर पड़ा। गुजरात की बात करूं तो 1848 से 1857 के आस-पास जोरिया नायक दास के नेतृत्व में जोरिया भगत विद्रोह किया गया था। 1913 में राजस्थान के मानगढ़ बलिदान बलिदान को हमेशा याद रखा जायेगा। 1921 में राजस्थान में ही पालचित्तरिया विद्रोह किया गया जिसका नेतृत्व नायक मोतिलाल तेजावत ने किया। 1922 में भूलाबिलोरिया विद्रोह

हुआ। 1797 में पझसी राजा ने केरल में विद्रोह किया। 1812 में कुरुचिया और कुरुमाओं समाज के नेतृत्व में जनजाति किसानों की क्रांति हुई। 1924 में आंध्रप्रदेश में क्रांतिकारी अल्लूरी सीताराम जाजू विद्रोह हुआ। महाराष्ट्र में भील जनजातियों के द्वारा किये गये नासिक विद्रोह का व्यापक असर पड़ा। 1930 में महाराष्ट्र के भाऊ खरे के नेतृत्व में वीर राघोजी विद्रोह हुआ। 1859 के आसपास अंडमान निकोबार द्वीप समूह में ग्रेट अंडमानी वनवासी समूह द्वारा अबेदीन की लड़ाई हुई।

1891 को भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के खिलाफ बिगुल फूंका और सतत संघर्ष किया। इस दौरान पूरा समाज उनके साथ खड़ा रहा। वह कालखंड स्वाधीनता के आंदोलन में रंग गया। बिरसा मुंडा के कृतित्व का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है, समाज जब उन्हें अपने धरती आबा यानी धरती के भगवान के रूप में मानने लगा। बिरसा मुंडा को भगवान के रूप में समाज ने स्वीकार्य किया। 1895 में जब धरती आबा ने यात्रा निकाली तो गांव – गांव के लोगों ने इसका समर्थन किया। देश भर में हुए इस संघर्ष से ब्रिटिश डर गये और जनजातीय समाज को बदनाम करने, बांटने की साजिश रचने लगे। जनजातियों को जंगल से बेदखल करने के लिए वन अधिनियम लाया गया। अंग्रेजों के द्वारा लाये गये इस अधिनियम के बाद वनों की संख्या, जानवरों की संख्या पर अगर गौर करें तो पता चलता है कि अधिनियम लाने के बाद वनो का ह्रास ज्यादा हुए, वनप्राणियों की संख्या घट गया। प्रकृति की रक्षा के लिए संकल्पित वनवासी समाज ने जंगल और प्रकृति की रक्षा के लिए अपना सबकुछ लगा दिया। राजाशंकर साह और रघुनाथ साह ब्रिटिश के शरण में आने से मना कर दिया और देश को स्वाधीन करने के लिए ब्रिटिश के खिलाफ बिगुल फूंका। इनके विद्रोह से ब्रिटिश इतने डर गये कि राजाशंकर साह व रघुनाथ साह को तोपों से बांधकर उड़ा दिया। ब्रिटिश सरकार को यह समझ में आ गया था कि जब तक इस समाज को बांटा नहीं जायेगा तब तक हम भारत में राज नहीं कर पायेंगे। यही कारण है कि जनजाति समाज को बांटने के लिए ब्रिटिश ने तरह – तरह के षड़यंत्र किये, जिसका साथ वामपंथियों ने दिया। स्वाधीनता के पश्चात ब्रिटिशों एवं इसाईत के अभियान के साथ वामपंथी संगठन, तथाकथित सेकूलरवादी लेखक व पत्रकार भी जुड़ गये। जनजातियों को भारतीय परंपरा से काटने के उद्देश्य से 9 अगस्त को आदिवासी दिवस के रूप में व्यापक स्तर पर प्रचारित और प्रसारित किया जाता है। 9 अगस्त की वास्तविकता यह कि ईसाईत और विस्तारवादी साम्राज्यवादी नीतियों के उद्देश्य से यूरोपीय आक्रमणकारियों ने अन्य देशों में जाकर वहां के मूल निवासियों के साथ बर्बरतापूर्वक अत्याचार किये परिणामस्वरूप वे लोग भाग कर जंगल में चले गये, शुरूआत में वहां रहने के कारण उसे आदिवासी कहा गया, अफ्रीका, अमेरिका, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया समेत दुनिया के बहुतेरे देशों में इतिहास उक्त घटनाओं से भरा पड़ा है। 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाना पश्चाताप भर है। उन देशों के उलट भारत में कोई भी बाहर से नहीं आया है और न ही पश्चिमी देशों की तरह अपने स्थान से बाहर भगाने की कोई घटना ध्यान आता है फिर भारत के जनजाति आदिवासी कैसे हुए। यहां का जनजाति समाज संपूर्ण भारतीय समाज का अभिन्न हिस्सा है। इसलिए 9 अगस्त को आदिवासी दिवस मनाने का भारत में कोई औचित्य ही नहीं है। जनजाति समाज सदियों से सनातन हिंदू परंपरा का अंग रहा है। प्रकृति का उपासक जनजाति वर्ग अपने को कभी हिंदू समाज से अलग नहीं मानता था। सनातन हिंदू परंपरा में भी वृक्षों जल एवं प्रकृति की पूजा आज भी होती है। बरगद, तुलसी, नदी, समुद्र आदि की पूजा देश के संपूर्ण भागों एवं प्रत्येक वर्गों में आज भी प्रचलित है।षड़यंत्रपूर्वक जनजातियों को गैर सनातनी दिखाने का प्रयास किया जाता है जबकि जनजातीय समाज सनातन परंपरा के वाहक हैं। दंतेवाड़ा में स्थित मां दंतेश्वरी के पूजारी जनजाति हैं। भगवान जगन्नाथ के मंदिर के पूजा का दायित्व भी इसी समाज को है। जनजातीय समाज का हर पर्व प्रकृति और सनातन को समर्पित है।

स्वाधीनता के पश्चात भी दशकों तक जनजातीय समाज को, उनकी संस्कृति, उनके समार्थ्य को पूरी तरह नजरअंदाज किया गया।जब हम स्वाधीनता का अमृत वर्ष को मना रहे हैं तो हमलोगों का दायित्व बनता है कि समाज के बलिदानियों की गाथा को देश के सामने लायें। आखिर क्या कारण है कि खासी विद्रोह, संथाल विद्रोह, जरवाड़ आंदोलन, टाना भगत आंदोलन, रानी गाइदिन्ल्यू, सिद्धो – कान्हो, शंकर शाह, रघुनाथ शाह, रानी दुर्गावति, मंशु ओझा, गंजन सिंह कोरकू इत्यादि के योगदान को विद्रोह तक सीमित कर दिया गया। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सार्वजनिक प्रयास से इतिहास के पन्नों से आज के युवाओं और आधुनिक समाज को परिचय कराने में सफल होंगे। जनजातीय गौरव दिवस इतिहास पन्नों पर पड़ी परत को हटाने में एक मील का पत्थर सिद्ध होगा। ■

1855 में संथाल परगना से जगी थी स्वाधीनता की अलख

| अजीत कुमार सिंह |

भारतीय इतिहास के साथ जितना छेड़-छाड़ किया गया, शायद ही किसी देश के इतिहास के साथ किया गया होगा। विडंबना देखिये सिदो-कान्हू के नेतृत्व में संथाल परगना(झारखंड)से उठे आजादी की जिस चिंगारी ने अंग्रेजों की नींद उड़ा दी थी उसे संथाल हूल तक सीमित कर दिया गया। पूरे देश के हर विद्यालय के इतिहास की किताब में पढ़ाया जाता है कि भारत के स्वतंत्रता के लिए पहला संघर्ष 1857 में हुआ था, जिसकी शुरुआत उत्तर प्रदेश के मेरठ से हुई थी।विडंबना की बात यह है जिस झारखंड राज्य में सिदो-कान्हू का जन्म हुआ हुआ उस झारखंड में बच्चे यही इतिहास पढ़ते हैं, जबकि इससे दो साल पहले 1855 में ही संथाल परगना की धरती पर न सिर्फ पहली बार अंग्रेजों के खिलाफ संगठित लड़ाई लड़ी गई, बल्कि अंग्रेजों को यहां से भागने पर मजबूर होना पड़ा था। सिदो-कान्हू के नेतृत्व में किये गये उस महान संघर्ष की याद में हर साल 30 जून को हूल दिवस तो मनाया जाता है, परंतु इतिहास और भारतीय स्वाधीनता संग्राम की गाथा में इस संघर्ष के उचित स्थान के लिए सरकार के स्तर पर आज तक कोई प्रयास नहीं किया गया। केंद्रीय शिक्षा बोर्डों से इतिहास की किताबों में संशोधन की मांग करना तो दूर की बात है, झारखंड राज्य के झारखंड अधिविध परिषद (जैक) बोर्ड की किताबों में भी हूल को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम नहीं माना गया है जबकि राज्य के इतिहासविद भी एकमत होकर कहते हैं कि ये संशोधन तो होना ही चाहिए। संथाल परगना में 1855 में हुए विद्रोह को कार्ल मार्क्स ने भी अपनी किताब 'नोट्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री' में 'जनक्रांति' माना है। समय आ गया है स्वाधीनता संग्राम के इस गौरवशाली पन्ने को देश के इतिहास में यथोचित स्थान दिलाया जाय। शुरुआत झारखंड सरकार अपने शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम बदलने से कर सकती है...। दुर्भाग्य देखिये जो राजनीतिक पार्टी सिदो-कान्हू-चांद-भैरव की बात कर सत्ता पर काबिज हुई, वह 30 जून को हूल दिवस मनाकर अपनी औपचारिकता पूरी कर लेती है। अच्छी बात है स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर सरकार के साथ-साथ विद्यार्थी परिषद जैसे संगठन गुमनाम महानायकों की कहानी की एकत्रित करने में जुटी है। आजादी के 75 वें वर्ष में भारत सरकार ने स्वाधीनता संग्राम में जनजातियों की भूमिका का महत्व समझते हुए भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

संथाल हूल ने तैयार की 1857 के संग्राम की पृष्ठभूमि

30 जून, 1855 को दो सगे भाई सिदो और कान्हू मुर्मू के नेतृत्व में करीब 30,000 संथालों ने विद्रोह कर दिया। संताल परगना क्षेत्र से अंग्रेजी शासन लगभग समाप्त हो गया था। स्वाधीनता के इस महान संघर्ष में सिदो-कान्हू के साथ उनके दो सगे भाई चांद और भैरव भी मारे गए। प्रसिद्ध इतिहासकार बीपी केशरी कहते थे कि संथाल हूल ऐसी घटना थी, जिसने 1857 के संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार की थी। इस आंदोलन के बाद ही अंग्रेजों ने संथाल

क्षेत्र को वीरभूम और भागलपुर से हटा दिया। 1855में ही संथाल परगना को 'नॉन रेगुलेशन जिला' बनाया गया। क्षेत्र भागलपुर कमिश्नरी के अंतर्गत था, जिसका मुख्यालय दुमका था। 1856 में पुलिस रूल लागू हुआ। 1860-75 तक सरदारी लड़ाई, 1895-1900 ई. तक बिरसा आंदोलन इसकी अगली कड़िया थीं।

जन विद्रोह था संथाल हूल

सिदो-कान्हू के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ किये गये हूल(विद्रोह) को सिर्फ संथाल परगना से जोड़ कर देखा जाता है, लेकिन यह बिहार, झारखंड, बंगाल से ओडिशा तक फैला था। इस विद्रोह में सिर्फ संथाली ही नहीं बल्कि अन्य कई जाति के लोगों की सहभागिता थी । पूरे इलाके में मार्शल लॉ लगाया था, जिससे हम समझ सकते हैं कि इसकी व्यापकता कितनी थी। वास्तव में संथाल हूल भारत का पहला जन विद्रोह था। स्वतंत्रता की पहली लड़ाई के तौर पर इसे स्थान मिलना ही चाहिए।

1856 में ब्रिटिश अखबारों ने भी माना था, संथाल विद्रोह आंखें खोलने वाला

संथाल हूल का इतना व्यापक असर था कि ब्रिटिश के अखबारों ने भी इस विद्रोह को ब्रिटिश सरकार के लिए आंख खोलने वाला बताया। 1856 के इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज अखबार में एक स्केच छपा था, जिसमें अंग्रेजों से संथालों का संघर्ष दर्शाया गया था। इस विद्रोह को कुचलने वालों में शामिल ब्रिटिश सेना के मेजर जर्विस ने उस समय लिखा था कि उन विद्रोहियों को जैसे समर्पण का अर्थ ही नहीं पता था। जब तक उनके नगाड़े बजते रहते, वे हमारी गोलियों के भी सामने खड़े रहते। नगाड़े बंद होते तो वे कुछ पीछे हटते। नगाड़े फिर शुरू होते ही फिर लड़ाई शुरू हो जाती।

संथाल हूल ने अंग्रेजों को नाकों दम कर दिया था

ब्रिटिश सरकार के कुत्सित चालों से वनवासी पहले ही जाग गये थे, परिणास्वरूप चारों भाइयों सिदो, कान्हू, चांद और भैरव के साथ फूलो और झानो ने अंग्रेजों और महाजनों से जमकर लोहा लिया। फूलो-झानो को इतिहास में शायद ही लोग जानते हैं, जबकि दोनों बहनों ने अंग्रेजों को नाकों दम कर दिया था, जो लोग भारत में नारीवाद की बात करते हैं उन्हें फूलो-झानों के कृतित्व को पढ़ना चाहिए। मेरी समझ से संथाल हूल ही आजादी की पहली लड़ाई थी।

हमारी किताब में संथाल विद्रोह पर सिर्फ एक पैराग्राफ

जिस संथाल हूल ने अंग्रेजों को नाकों चने जबवा दिये थे उस विद्रोह को देश की इतिहास की किताब में महज औपचारिकता भर जिक्र किया गया है। झारखंड अधिविध परिषद (जैक बोर्ड) की आठवीं की सामाजिक विज्ञान की किताब 'आधुनिक भारत' में संथाल विद्रोह को तो शामिल किया गया है, लेकिन उसे एक पैराग्राफ में निपटा दिया गया।

'करो या मरो' जैसे नारे पहली बार संथाल हूल में लगे थे

भारत की स्वाधीनता के लिए गांधी जी के द्वारा दिये गये 'करो या मरो' नारे सभी जानते हैं कि लेकिन बहुत कम ही जानते है कि संथाल हूल में पहली बार नारे लगे 'अबुआ राज', 'करो या मरो', 'अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो', 'हमने खेत बनाए हैं, इसलिए ये हमारे हैं'। आंदोलन राजमहल, बांकुड़ा, हजारीबाग, गोला, चास, कुजू, बगोदर, सिंदरी, हथभंगा, वीरभूम, जामताड़ा, देवघर, पाकुड़, गोड्डा, दुमका, मधुपुर सहित कई क्षेत्रों में फैला। आजादी की यह पहली लड़ाई थी। इतिहास फिर से लिखना ही चाहिए।

संथाल हूल में दस हजार से अधिक सेनानी बलिदान हुए थे

झारखंड में संथाल हूल पर बहुत लिखा गया है। संथाल परगना में 10 हजार से ज्यादा लोग मारे गए। हूल 1855 से 1858 तक चला। इसलिए यह सोचने वाली बात है कि जिस हूल में दस हजार से अधिक सेनानी बलिदान हुए उसे किस प्रकार षड़यंत्रपूर्वक संथाल विद्रोह तक सीमित कर दिया गया, जबकि यह विद्रोह देश की आजादी के लिए ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध लड़ी गई। समय आ गया आजादी के इस अमृत महोत्सव में स्वाधीनता के महानायकों की गौरवगाथा का पुनर्लेखन किया जाय, जिससे आने वाली पीढ़ियां गर्व कर सके और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शौर्यपूर्ण गाथा से परिचित हो सके। ■

Dr.ChhaganbhaiNanjibhai Patel and NidhiTripathi re-elected as National President and National General Secretary of ABVP

Prof. Dr.ChhaganbhaiNanjibhai Patel (Gujarat) and NidhiTripathi (Delhi) have been elected unopposed as National President and National General Secretary respectively of nation's leading student organization AkhilBharatiyaVidyarthiParishad for the year 2021-22. This announcement was made today from the Central Office of ABVP in Mumbai.

According to the statement issued by the Election Officer Dr.Nagesh Thakur from the Central Office of ABVP, the tenure of both the posts will be of one year, and both the office bearers will assume their responsibility during the 67th National Conference of ABVP scheduled to be held in Jabalpur (Mahakoshal) on 24th, 25th, & 26th December 2021.

Prof. Dr.ChhaganbhaiNanjibhai Patel (CN Patel) hails from Mahesana district of Gujarat. He completed his PhD in Pharmacy. Presently, he is working as a Professor and the Principal of 'Sarvajanik Pharmacy College' in Mahesana. He is also Dean of the Faculty of Pharmacy and member of the Board of Governors of the Gujarat Technical University. He has published 44 International as well as more than 170 national level research papers and has guided more than 24 scholars on various research topics for PhD degree in pharmacy. He is also a member of the Pharmacy Council of India. Since his student life he is active in social field. He played an important role in making students, teachers and entrepreneurs in the pharmaceutical sector of Gujarat sensitive and supportive different sections of society. For the last 13 years, he has given direction to the dialogue about academic and social issues through the famous national level seminar "PharmaVision". Since 1996 he is active as a teacher karyakarta serving roles from the city president to the president of Gujarat and later holing important responsibility of National Vice President. He has been elected as the National President of ABVP for this session (2021-22). He resides in Mahesana.

NidhiTripathi hails from Pratapgarh district of Uttar Pradesh. She has done BA from Allahabad University and MA, MPhil from Jawaharlal Nehru University. She continues to pursue PhD from JNU. She has been actively associated with ABVP since 2013. After holding various responsibilities in JNU unit, she represented ABVP as the Presidential Candidate for JNUSU in the year 2017. She actively participated in the students' protest against the anti-national sloganeering that took place in JNU in 2016, and played an important role in taking the Mission Sahasi campaign undertaken by ABVP on national level. She represented our nation in Indian youth delegation to Sri Lanka organized by Ministry of Sports and Youth Affairs, Government of India. As a researcher in Sanskrit literature, she has presented papers in various national and international conferences. A vociferous spokesperson of nationalism and active on issues of students' interests, she is former National Secretary of ABVP. She has been re-elected as the National General Secretary of ABVP for this session (2021-22). She resides in Delhi. ■

आजादी के ज्ञात-अज्ञात हुतात्माओं से जन-जन को कराना होगा परिचित : श्रीनिवास

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) गोरखपुर महानगर के कार्यकर्ताओं ने बुधवार को अमृत महोत्सव के तहत एक संगोष्ठी का आयोजन किया। सरस्वती विद्या मंदिर महिला महाविद्यालय आर्यनगर में आयोजित संगोष्ठी में ज्ञात-अज्ञात बलिदानियों की कहानी को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प दोहराया गया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सहसंगठन मंत्री श्रीनिवास ने कहा कि भारत विज्ञान और तकनीकी आधार पर सबसे धनी और विकसित राष्ट्र था। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता'' के भाव में भारत विश्वास रखने वाला देश है। इसके निर्माण में मातृशक्ति का स्थान महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि जब हम मातृ शक्ति को स्वीकार कर आदि शक्ति का आह्वान करेंगे, तब भारत पुनः परम वैभव को प्राप्त करेगा। भगिनी निवेदिता को याद करते हुए कहा कि यदि विश्व के लोगों को सीखना है तो वह भारतीय महिलाओं से सीखें।उन्होंने कहा कि महिला होने का डर समाज से निकालना होगा। भारत ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' में विश्वास रखता है। विश्व को शून्य, दशमलव, योग और शल्य चिकित्सा की सीख इसी देश ने दी है।

उन्होंने कहा कि हमें भारत का वास्तविक इतिहास नहीं पढ़ाया गया। भारत की पहचान वेद हैं। लेकिन यहां जानबूझकर ब्रिटिश शिक्षा नीति को लागू की गई। हमारी संस्कृति में 'धर्म' केवल पूजा पद्धति नहीं हैं, 'कर्तव्य' हैं।

अभाविप गोरखपुर महानगर अध्यक्ष डॉ. अनुपम सिंह ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अपने स्थापना काल से ही राष्ट्रहित और समाज में निरंतर कार्य कर रही है। इस वर्ष संपूर्ण देश आजादी का 75वां वर्षगांठ मना रहा है। संपूर्ण देश में आजादी का अमृत महोत्सव अभियान चलाया जा रहा है। भारत की आजादी में प्राणो की आहुति देने वाले अकीर्तित नायकों के योगदान को जन-जन पहुंचाने का कार्य हो रहा है।

आभार ज्ञापन सरस्वती विद्या मंदिर महिला महाविद्यालय आर्यनगर की प्राचार्य डॉ. रीना त्रिपाठी व मंच संचालन महानगर मंत्री प्रशांत त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर अभाविप पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय संगठन मंत्री घनश्याम शाही, प्रान्त संगठन मंत्री आनंद गौरव, राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद सदस्य नवनीत शर्मा, प्रान्त सहमंत्री हर्षवर्धन सिंह व सौरभ गौड़, नगर विस्तारक शुभम दुबे, मीडिया संयोजक अनुराग मिश्रा, प्रभात राय, सौम्या गुप्ता, अभिजित शर्मा, अनुभव शाही, अन्चितय पांडेय आदि उपस्थित रहे ■

KarthikeyanGanesan of Villupuram (Tamil Nadu) awarded the prestigious Prof. YeshwantraoKelkar Youth Award 2021

The Selection Committee for the Prof YeshwantraoKelkar Youth Award 2021 has approved the name of KarthikeyanGanesan, a resident of Villupuram (Tamil Nadu). He has worked extensively for offering people with intellectual and developmental disabilities and marginalized individuals the chance to live, learn, work, and generate income; allowing them to reach their full potential through organic farming and adult independent living training. He will be conferred with the award in the 67th National Conference of ABVP scheduled to be held in Jabalpur.

KarthikeyanGaneshan, a native of Villupuram (Tamil Nadu), while working at the orphanage, learned that there are 1.6 million persons with intellectual and developmental disabilities in India (Census 2011) with about 75% living in rural areas. With a low employment rate and higher living expenses, they are one of the most impoverished groups in India. It became ShriKarthikeyan's mission to change this, and hence the Sristi Foundation was born. Back in 2013, ShriKarthikeyan bought 10 acres of land to build the Sristi Village Foundation. At the time, the land was dry and infertile. Since then, community members have converted the once barren area into fertile land that hosts several eco-friendly projects managed by those with diverse abilities. On the 10-acre of land, ShriKarthikeyan has created an inclusive and holistic environment that they call Sristi Village. The Sristi Foundation runs three pioneer projects: Sristi Village, Sristi Special School, and Sristi Farm Academy as well as numerous community support and environmental projects. Through the Sristi Village community model, people with intellectual and developmental disabilities learn adult independent living skills and job skills experientially. It helps them to lead an independent life in mainstream society.

This award is given in memory of Prof YeshwantraoKelkar since 1991, who is remembered as the architect of the organization and for his role in its expansion. The Award is a joint initiative by AkhilBharatiyaVidyarthiParishad and VidyarthiNidhiNyas, which is committed to the betterment of students and working in the field of education.

The Award aims to highlight the work of young social entrepreneurs, to encourage them, and to express the youth's gratitude towards such social entrepreneurs, inspiring young Indians. The Awardee is awarded with Rs. 1,00,000/- cash, certificate, and memorabilia.

ABVP National President Prof Chhaganbhai Patel and National General Secretary NidhiTripathi have conveyed their greetings to the awardee and wished him success in his future endeavors. ■

स्वतंत्र एवं सशक्त भारत की बुनियाद में वैज्ञानिकों का योगदान

| उमाशंकर मिश्र |

स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्र भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास और वैज्ञानिकों के योगदान की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। एक आम धारणा है कि हमारा स्वतंत्रता संग्राम मुख्य रूप से राजनीतिक और आर्थिक था, और इससे सामाजिक पहलू जुड़े थे। लेकिन, बहुत कम लोग जानते हैं कि विज्ञान के क्षेत्र में भी स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था, और इसमें वैज्ञानिकों ने अहम भूमिका निभायी। आंग्ल पराधीनता के कठिन दौर में देश के भविष्य निर्माण का सपना देखना और उसे साकार करने हेतु संस्थानों की आधारशिला रखना ही अपने आप में भारतीय वैज्ञानिकों की अदम्य भावना और उनके बेजोड़ योगदान को दर्शाता है।

19वीं सदी के उत्तरार्ध में आजादी की लड़ाई के साथ साथ देश में ज्ञान-विज्ञान की भी एक नई लहर उठी थी। इस दौरान अनेक मूर्धन्य वैज्ञानिकों ने जन्म लिया, जिनमें जगदीश चंद्र बसु, प्रफुल्ल चंद्र राय, श्रीनिवास रामानुजन और चंद्रशेखर वेंकटरामन जैसे महान वैज्ञानिकों का नाम लिया जा सकता है। इन्होंने पराधीनता के बावजूद अपनी लगन तथा निष्ठा से विज्ञान में उस ऊंचाई को छुआ, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। ये आधुनिक भारत की पहली पीढ़ी के वैज्ञानिक थे, जिनके कार्यों और आदर्शों से भारतीय विज्ञान को एक नई दिशा मिली।

अपनी आजादी के 75वें वर्ष में कदम रखते हुए देश एक बार फिर उन महान विभूतियों को नमन कर रहा है, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया, ताकि हम आसानी से एक सुखी और समृद्ध भारत में साँस ले सकें। ऐसे वीर हृदय लोगों के योगदान का स्मरण करते हुए आजादी के 75वें वर्ष को पूरे देश में 'स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है। तमाम कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि विभिन्न स्वरूपों और माध्यमों के माध्यम से भारत की उन महान विभूतियों की अदम्य भावना की गाथा को उजागर किया जा सके, जिन्होंने स्वंतत्रता आंदोलन और उसके बाद देश के भविष्य की मजबूत बुनियाद रखने में अपनी सशक्त भूमिका निभायी है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व को पुराने जमाने से ही सभी ने अच्छी तरह से समझा है। अंग्रेज कोई अपवाद नहीं थे। इस प्रकार, 1757 में प्लासी की लड़ाई के दस साल बाद, रॉबर्ट क्लाइव ने वर्ष 1767 में वर्तमान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सबसे पुराने संगठन 'सर्वे ऑफ इंडिया' की स्थापना की। उन्होंने महसूस किया कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के बिना वे देश को नहीं समझ पाएंगे। इस संगठन ने उन्हें देश का नक्शा बनाने में मदद की। वे स्पष्ट रूप से समझते थे कि यदि भारतीय आबादी को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के नवीनतम विकास से दूर रखा जाए, तो वे भारत पर बहुत कुशलता से शासन करने में सक्षम होंगे।

हम जानते हैं कि वैज्ञानिक प्रगति के कारण इंग्लैंड उद्योग स्थापित करने में सक्षम था। वर्ष 1760 की बात है, जब ब्रिटेन में पहली औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई। यह क्रांति प्राकृतिक और आर्थिक दोनों संसाधनों पर आधारित थी। भारत में प्लासी की लड़ाई जीतने के बाद अंग्रेजों को बंगाल और बिहार के दीवानी अधिकार प्राप्त हो गए। इससे अंग्रेजों को धन और नियंत्रण शक्ति मिलने के साथ-साथ बाद में वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों पर स्वामित्व भी मिल गया। इससे उनकी पहली औद्योगिक क्रांति में अत्यधिक मदद मिली।

प्लासी की लड़ाई के ठीक 10 साल बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने सर्वे ऑफ इंडिया की स्थापना की।

हमें इसके पीछे के कारणों की गहराई से जाँच करने की जरूरत है। यह स्पष्ट था कि उन्हें दो तरह से समर्थन की आवश्यकता थी। सबसे पहले, अपनी सेना की मदद के लिए उन्हें भौगोलिक क्षेत्र के ज्ञान की आवश्यकता थी, और इसलिए, भारत का सर्वेक्षण आवश्यक था। आज भी सर्वे ऑफ इंडिया महत्वपूर्ण कार्य करता है। सभी प्रकार के नक्शे तैयार किए गए, और यह सेना के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। बाद में, अधिक सर्वेक्षणों की शुरूआत के साथ, अंततः भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना की गई। इस प्रकार, विभिन्न संस्थान स्थापित करने का एकमात्र आधार वैज्ञानिक अध्ययन था, क्योंकि अंग्रेज जानते थे कि प्राकृतिक संसाधनों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाना चाहिए, ताकि उनका उपयोग औद्योगिक क्रांति की सफलता के लिए किया जा सके।

विज्ञान के माध्यम से अंग्रेज कई अन्य उन्नत प्रौद्योगिकियों को भी साथ भारत में लाए, लेकिन वे देश के विकास और भारतीयों की भलाई के लिए नहीं थीं। उदाहरण के लिए, उन्होंने भारत में पोस्ट और टेलीग्राफ की शुरुआत की, क्योंकि सेना को संचार के लिए इसकी आवश्यकता थी। रेलवे की शुरुआत 1853 में हुई थी, लेकिन रेलवे भी आम लोगों की सुविधा के लिए नहीं थी, बल्कि वह लूटे गए प्राकृतिक संसाधनों के परिवहन के लिए उपयोग की गई, जिससे प्राकृतिक संसाधनों को मुंबई पोर्ट के जरिये इंग्लैंड भेजा जा सके। वर्ष 1835 में, कलकत्ता के एक कॉलेज में ईस्ट इंडिया कंपनी ने आधुनिक चिकित्सा पद्धति एलोपैथी का अभ्यास भी शुरू किया। यह आधुनिक चिकित्सा भी ब्रिटिश सेना के लिए लायी गई थी। इस तरह अंग्रेजों द्वारा लायी गई आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उद्देश्य उनकी शक्ति को मजबूत करना, और देश के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम शोषण करना था।

फिर भी, हमारे वैज्ञानिकों ने अपने दृढ़ संकल्प, स्वाभिमान और अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम के साथ अपना संघर्ष जारी रखा। प्रमथ नाथ बोस सर्वे ऑफ इंडिया में शामिल होने वाले पहले भारतीय वैज्ञानिकों में से एक थे। एक श्रेष्ठ भूविज्ञानी के रूप में बोस स्वदेशी दृष्टिकोण से प्रेरित थे। बेहतर अनुभव होने के बावजूद वे अधीक्षक के पद पर पदोन्नति से वंचित रहे, जो कि एक बहुत कनिष्ठ अंग्रेज को दे दिया गया। इस प्रकार, बोस ने 'सर्वे ऑफ इंडिया' को छोड़ने का फैसला किया और भूविज्ञानी के रूप में मयूरभंज राज्य से जुड़ गए। बोस को भारतीय विज्ञान के इतिहास में पहली बार बहुत कुछ करने का श्रेय दिया जाता है। वह एक ब्रिटिश विश्वविद्यालय से विज्ञान में पहले भारतीय स्नातक थे, जिन्होंने सबसे पहले असम में तेल की खोज की, भारत में सर्वप्रथम साबुन का कारखाना स्थापित किया, बंगाल प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना की, जो बाद में प्रसिद्ध जादवपुर विश्वविद्यालय बन गया, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने जमशेदपुर में टाटा स्टील की स्थापना का नेतृत्व किया।

भारत में आज भी अंग्रेजी दवाईयों का प्रचलन अधिक है और अंग्रेज चाहते भी यही थे कि एलोपैथी के मुकाबले अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ पनपने न पाएं। इसके बावजूद, भारतीय चिकित्सक, शोधकर्ता एवं समाज सुधारक महेंद्रलाल सरकार ने अंग्रेजी दवाइयों के सामने होम्योपैथी को बढ़ावा दिया। वह मानते थे कि जो असर होम्योपैथी दवाइयों में हैं, वो किसी अंग्रेजी दवा में नहीं है। आज भी ऐसी कई बीमारियां है, जिनका उपचार होम्योपैथी दवाइयों से किया जा सकता है। उन्होंने साल 1876 में फादर यूजेन लफॉ के साथ मिलकर इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ साइंस (आईएसीएस) की नींव रखी, जो देश का सबसे पुराना विज्ञान से जुड़ा संस्थान है। वे बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रामकृष्ण परमहंस और त्रिपुरा के महाराजा जैसे दिग्गजों के डॉक्टर थे। उन्हें कई बार कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई के दौरान कई विषयों पर लेक्चर देने का मौका मिला। ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन की एक बैठक में होम्योपैथी को पश्चिमी उपचार से बेहतर बताया था, जिसके बाद उन्हें अंग्रेजों के भेदभाव एवं प्रताड़ना का शिकार बनना पड़ा।

वर्ष 1904 में, डॉ महेंद्र सरकार के निधन के बाद, डॉ आशुतोष मुखोपाध्याय, डॉ श्यामा प्रसाद मुखोपाध्याय के पिता; आईएसीएस के अध्यक्ष बने। उन्होंने ही चंद्रशेखर वेंकटरामन को इस संस्था में आमंत्रित किया था। यहाँ काम करते हुए रामन को नोबेल पुरस्कार मिला, जो सिर्फ भारतीयों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे एशिया के लिए एक सम्मान का पर्याय बन गया। इस संस्था ने राष्ट्रीय विज्ञान आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया। यहाँ

वैज्ञानिकों की पहली पीढ़ी विकसित होती रही। आचार्य जगदीश चंद्र बोस ही नहीं, आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रॉय और डॉ आशुतोष मुखोपाध्याय, और स्वामी विवेकानंद जैसे लोग संस्थान में आते थे।

यहां हमें मशहूर भारतीय वैज्ञानिक डॉ जगदीश चंद्र बोस का उदाहरण भी याद रखना चाहिए। वर्ष 1904 में, लॉर्ड रेले को आर्गन गैस की खोज के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। वह लंदन की रॉयल सोसाइटी के अध्यक्ष थे। उन्होंने अपने मेधावी छात्र जगदीश चंद्र के लिए सिफारिश का एक पत्र भेजा था, और सुझाव दिया कि उन्हें भौतिकी पढ़ाने की अनुमति दी जानी चाहिए। बोस मूल रूप से एक भौतिक विज्ञानी थे। जब उन्होंने आवेदन किया नौकरी के लिए, तो उन्हें बताया गया कि भारतीयों के विचार तर्कसंगत नहीं होते हैं, और इसलिए उनकों भौतिकी जैसा विषय पढ़ाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि यह नहीं कहा गया था कि जगदीश चंद्र के पास तर्कसंगत सोच नहीं थी, बल्कि सामान्य तौर पर भारतीय लोगों में तार्किक सोच की कमी का आरोप मढ़कर एक प्रतिभाशाली भारतीय की उपेक्षा की गई। बोस ने इस अपमान को बर्दाश्त नहीं किया और विरोध किया। उन्होंने भारतीयों को भौतिकी पढ़ाया, लेकिन ब्रिटिश वेतन नहीं लिया। तीन साल तक उन्होंने बिना वेतन के पढ़ाया और यह नेक कार्य मातृभूमि के प्रति उनके प्रेम से प्रेरित था। तीन साल बाद बोस की जीत हुई। तीन साल बाद स्वयं अंग्रेजी सरकार उनकी शरण में आई और उन्हें भौतिक विज्ञान का प्राध्यापक स्वीकार किया। इस तरह, अन्याय और भेदभाव के खिलाफ बोस की लड़ाई; गांधीजी के 1917 के चंपारण सत्याग्रह से मिलती-जुलती थी।

विज्ञान में शोध और ज्ञान का सृजन करना होता है। इसे भारत में अंग्रेजों ने दबाने का हर संभव प्रयास किया। भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, वनस्पति सर्वेक्षण, जूलोजिकल सर्वेक्षण और पुरातत्व में काम कर रहे कई भारतीयों ने काम किया। उनके वैज्ञानिक शोध पत्र इंग्लैंड की शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। भारत के ज्ञान का उपयोग भी अंग्रेजों ने इंग्लैंड में विज्ञान की उन्नति के लिए किया। ब्रिटिश नहीं चाहते थे कि भारतीय वैज्ञानिक भारत में कोई शोध करें और सफल हों। इसका विरोध करने वाले पहले वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस थे। दस साल तक अध्यापन करने के बाद, 1894 में उन्होंने अपने अनुसंधान कार्य की शुरुआत की। लेकिन, उन्हें अंग्रेजों से कोई मदद नहीं मिली। उन्होंने अपनी वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की और सारा खर्च वहन किया। उनके द्वारा किया गया शोध अद्वितीय था; जो यूरोपीय देशों के वैज्ञानिक हासिल नहीं कर सके, वह सफलता उन्हें मिली।

एम्स क्लार्क मैक्सवेल ने विद्युत चुम्बकीय तरंगों के सिद्धांत को प्रतिपादित किया और उन्हें प्रयोगों के माध्यम से इसे सत्यापित करने की आवश्यकता थी। तब तक दुनिया में किसी ने भी माइक्रोवेव तरंगें उत्पन्न नहीं की थी। जगदीश चंद्र बोस ने दुनिया में पहली बार ऐसा किया। इसके बाद वे लंदन गए और वहाँ अपना शोध प्रस्तुत किया। हालांकि, बाद में मार्कोनी को आविष्कार के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। इन वैज्ञानिकों को जिस संघर्ष का सामना करना पड़ा, उसकी कल्पना हम आसानी से कर सकते हैं। जगदीश चंद्र बोस ने इस तथ्य को दोहराया कि जब तक हम ज्ञान उत्पादन में सफल नहीं होते, हम दुनिया में सम्मानित नहीं होंगे। आज उन्हें न केवल 'माइक्रोवेव का जनक' कहा जाता है, बल्कि उन्हें बायोफिजिक्स और प्लांट न्यूरोबायोलॉजी का जनक भी माना जाता है। यही नहीं, विज्ञान के एक अन्य उभरते क्षेत्र क्रोनोबायोलॉजी का जनक भी उन्हें माना जा सकता है।

भारत की वैज्ञानिक प्रगति में भौतिक-विज्ञानी सर चंद्रशेखर वेंकटरमन (सी.वी. रामन) के शोध और अविष्कार बेहद महत्वपूर्ण हैं। उनके एक शोध 'रामन प्रभाव' के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1928 में आज ही के दिन किए गए उनके इस आविष्कार को याद करने और छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिये हर वर्ष 28 फरवरी को 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। सीवी रामन की गिनती देश के सार्वकालिक महानतम वैज्ञानिकों में की जाती है। प्रकाश की प्रकृति और उसके स्वरूप के आधार पर की गई उनकी खोज दुनिया की असाधारण वैज्ञानिक उपलब्धियों में गिनी जाती है। सर सी.वी. रामन ने 28 फरवरी 1928 को रामन प्रभाव की खोज की थी। उनकी इस खोज को 28 फरवरी 1930 को ही मान्यता मिली थी। भारत में वर्ष 1987 से हर साल इस दिन को भारत में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाए जाने की शुरुआत हुई। इसका उद्देश्य रामन की वैज्ञानिक परंपरा

को और समृद्ध करके नई पीढ़ी को विज्ञान के प्रति प्रोत्साहित करना है, ताकि वैज्ञानिक गतिविधियों को बल मिल सके।

भारत के ही एक और महान वैज्ञानिक आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय भारत में रसायन विज्ञान के जनक माने जाते हैं। उन्होंने रसायन प्रौद्योगिकी में देश के स्वावलंबन के प्रयास किए। आचार्य राय भारत में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक पुनर्जागरण के स्तम्भ थे। आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय सही मायनों में भारतीय ऋषि परम्परा के प्रतीक थे। आचार्य प्रफुल्ल के मन में आजादी की लौ हमेशा जलती रहती थी। उन्होंने देश की आजादी को हमेशा विज्ञान से ऊपर रखा। उनका मानना था कि विज्ञान मानव जगत की सेवा के लिए है और इसकी राह राजनीतिक स्वतंत्रता से होकर जाती है, अन्यथा विज्ञान का फायदा देशवासियों को न मिलकर उन पर राज करने वाले अंग्रेजों को मिलेगा।

खगोल विज्ञान में 'साहा समीकरण' को वर्षों से प्रयोग में लाया जा रहा है। इस समीकरण को स्थापित करने वाले महान भारतीय वैज्ञानिक और खगोलविद प्रोफेसर मेघनाद साहा अंतरराष्ट्रीय ख्याति के खगोलविद थे। उनकी इस ख्याति का आधार है -साहा समीकरण। यह समीकरण तारों में भौतिक एवं रासायनिक स्थिति की व्याख्या करता है। साहा नाभिकीय भौतिकी संस्थान तथा इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ साइंस जैसी कई महत्वपूर्ण संस्थाओं की स्थापना का श्रेय प्रोफेसर साहा को जाता है। वर्ष 1917 में क्वांटम फिजिक्स के प्राध्यापक के तौर पर उनकी नियुक्ति कोलकाता के यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंस में हो गई। अपने सहपाठी सत्येन्द्रनाथ बोस के साथ मिलकर प्रोफेसर साहा ने आइंस्टीन और मिंकोवस्की के शोधपत्रों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया। वर्ष 1919 में अमेरिका के एक खगोल भौतिकी जर्नल में साहा का एक शोध पत्र छपा। यह वही शोध पत्र था, जिसमे उन्होंने 'आयनीकरण फार्मूला' प्रतिपादित किया था। यह फॉर्मूला खगोलशास्त्रियों को सूर्य और अन्य तारों के आंतरिक तापमान और दबाव की जानकारी देने में सक्षम है। इस खोज को खगोल विज्ञान की 12वीं बड़ी खोज कहा गया है। यह समीकरण खगोल भौतिकी के क्षेत्र में एक नई उर्जा और दूरगामी परिणाम लाने वाला सिद्ध हुआ और उनके इस सिद्धांत पर बाद में भी कई शोध किये गए।

महिलाओं वैज्ञानिकों का योगदान भी किसी मामले में कम नहीं है। अन्ना मोदयिल मणि (अन्ना मणि), जो वास्तव में विज्ञान की दुनिया में किसी मणि से कम नहीं थीं। वर्ष 1930 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त वाले भारतीय वैज्ञानिक सी.वी. रामन के विषय में तो लोग बखूबी जानते हैं, लेकिन, अन्ना मणि को नहीं, जिन्होंने रामन के साथ मिलकर काम किया। मूल रूप से भौतिकशास्त्री अन्ना मणि एक मौसम वैज्ञानिक थीं। वह भारत के मौसम विभाग के उप-निदेशक के पद पर रहीं और उन्होंने मौसम विज्ञान उपकरणों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सौर विकिरण, ओज़ोन और पवन ऊर्जा माप के विषय में उनके अनुसंधान कार्य महत्वपूर्ण हैं। अन्ना मणि के मार्गदर्शन में ही, उस कार्यक्रम का निर्माण संभव हुआ, जिसके चलते भारत मौसम विज्ञान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सका। यदि अन्ना मणि उच्च कोटि की भौतिकशास्त्री थीं, तो यही उपाधि रसायनशास्त्र के क्षेत्र में असीमा चैटर्जी को निर्विवाद रूप से दी जा सकती है। वर्ष 1917 में कलकत्ता के एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मीं असीमा चैटर्जी ने विन्का एल्कोलाइड्स पर उल्लेखनीय काम किया, जिसका उपयोग मौजूदा दौर में कैंसर की दवाएं बनाने में किया जाता है।

देश के विभिन्न स्थानों पर इस तरह के प्रयास हो रहे थे और भारत के विज्ञान मनीषियों द्वारा अनेक संस्थाएँ स्थापित की जा रही थीं। तमाम बाधाओं के बावजूद प्रसिद्ध वनस्पतिशास्त्री शंकर पुरुषोत्तम आगरकर ने पुणे में महाराष्ट्र एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंसेज की स्थापना की। इसके लिए कहा जाता है कि उन्हें अपना निजी सामान और पत्नी के जेवर तक बेचने पड़े। पुणे में स्थापित उस संस्थान को अब आगरकर संस्थान के रूप में जाना जाता है।

इस तरह स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के बाद भी वैज्ञानिकों का योगदान उल्लेखनीय रहा है, जिसके बिना देश के भविष्य की रूपरेखा बनाना और उस पर आगे बढ़ना संभव नहीं था। आज से 25 वर्षों के बाद देश जब अपनी स्वाधीनता का शताब्दी वर्ष मनाएगा, तो उम्मीद करनी चाहिए कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत विश्वगुरु बनकर उभरेगा। ■

अभाविप ने रानी लक्ष्मीबाई को किया स्त्री शक्ति के रूप में याद, देशभर में आयोजित किये कार्यक्रम

महारानी लक्ष्मीबाई को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद स्त्री शक्ति की प्रतीक मानती है। स्त्री शक्ति दिवस के मौके पर अभाविप ने देशभर में संगोष्ठी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, प्रशिक्षण शिविर, मैराथन प्रतियोगिता आदि का आयोजन किये । असम के मोरीगांव टाउन इकाई के कार्यकर्ताओं ने रानी लक्ष्मी बाई जयंती के अवसर पर नर्सों, डॉक्टरों, पुलिस, डीएसपी और अन्य महिला अधिकारियों को सम्मानित किया। वहीं अवध प्रांत के उन्नाव में एक दिवसीय मणिकर्णिका क्रीड़ा महोत्सव का आयोजन किया गया।बलरामपुर नगर में एक दिवसीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ताइक्वांडो खिलाड़ी भव्या मिश्रा एवं सदफ अनवर द्वारा छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाए गए।

ग्वालियर में अभाविप कार्यकर्ताओं ने शोभा यात्रा निकाली।शोभायात्रा में सैंकड़ों छात्राओं ने रानी लक्ष्मीबाई जी और उनकी सेना का रूप धारण कर भाग लिया।अभाविप हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय इकाई द्वारा रानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम 'वीरांगना' का आयोजन किया गया। भोपाल महानगर के कार्यकर्ताओं ने रानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती के अवसर पर 30 फीट की भव्य रंगोली बनाकर उनके शौर्य, अदम्य साहस और पराक्रम को नमन किया।ब्रज प्रांत में बरेली जिला के बथुआ नवादा गांव में अभाविप कार्यकर्ताओं ने रानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती पर जरूरतमंद महिलाओं और युवतियों को सेनेटरी पैड वितरित किए।बिहार प्रान्त में नवगछिया इकाई के द्वारा रानी लक्ष्मीबाई जयंती के अवसर पर 'स्वाभिमान यात्रा' निकाली गई एवं 'वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण की दशा एवं दिशा और आज की मणिकर्णिका' विषय पर छात्रा संवाद का आयोजन किया गया।अभाविप कानपुर प्रांत के इटावा में रानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती पर शोभायात्रा निकाली गई।झांसी महानगर में जयंती की पूर्व संध्या पर शोभायात्रा निकालकर उन्हें नमन किया।

अभाविप दक्षिण बंगाल प्रांत में रानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती के अवसर पर दक्षिण कोलकाता, पूर्व कोलकाता, मद्यमग्राम और बरईपुर इकाई की कार्यकर्ताओं ने महिलाओं व युवतियों के बीच सेनेटरी पैड वितरित किए।जम्मू-कश्मीर प्रांत में रानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती के अवसर पर शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू इकाई द्वारा नेट परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली होनहार छात्राओं को सम्मानित किया गया।अभाविप राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा रानी लक्ष्मीबाई जी की जयन्ती के अवसर पर #RunForLADLIमैराथन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 1100 से अधिक छात्राओं ने भाग लिया।अंबाला जिला में'स्त्री शक्ति दिवस' पर देव समाज महिला महाविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की मेधावी छात्राओं को भी सम्मानित किया गया।मालवा प्रांत के खरगोन में भव्य शोभायात्रा निकाली गई। रानी लक्ष्मीबाई जयंती की पूर्व संध्या पर अभाविप ओडिशा द्वारा मासिक धर्म स्वच्छता हेतु अभियान ऋतुमति अभियान का शुभारंभ किया गया। शुभारंभ दिवस पर, भुवनेश्वर और कटक में विभिन्न कॉलेज छात्रों के लिए मुफ्त स्वास्थ्य जांच शिविर और सैनिटरी नैपकिन वितरण कार्यक्रम चलाया गया।पुणेमें अभाविप कार्यकर्ताओं ने मणकर्णिका दौड का आयोजन किया, दौड़ की शुरुआत लाल महल से जिजाऊ माँ की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर हुई। नगर निगम भवन से बालगंधर्व में झांसी की रानी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दौड़ का समापन किया गया। ■

हि.प्र. केंद्रीय विवि छात्र परिषद चुनाव में बजा अभाविप का डंका, सभी 19 पदों पर हुई जीत

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में छात्र परिषद (शैक्षणिक सत्र 2021-22) के चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने जीत का परचम लहराया है। छात्र परिषद के सभी पदों पर अभाविप की जीत हुई है। छात्र परिषद में कुल 19 पदों पर चुनाव हुए थे, जिसमें 12 पदाधिकारी पहले ही निर्विरोध चुन लिए गए थे। वहीं तीन दिसंबर को तीन स्कूलों में सात सीटों हेतु 10 उम्मीदवारों के लिए वोट डाले गए। इनमें भी सभी सात सीटों पर अभाविप के उम्मीदवारों की जीत हुई है। अभाविप विश्वविद्यालय इकाई के अध्यक्ष वैभव खरवाल ने कहा कि इन चुनावों में विद्यार्थी परिषद की भारी बहुमत से जीत हुई है। उन्होंने बताया कि निर्विरोध चुने गए 12 प्रतिनिधियों के अलावा सात पर हुए चुनाव में भी विद्यार्थी परिषद समर्थित प्रतिनिधि ही चुनाव जीते हैं।

गौर हो कि चुनाव में कुल 31 उम्मीदवारों ने नामांकन भरे थे, इनमें से पांच के नामांकन रद्द हुए और चार उम्मीदवारों ने नामांकन वापस लिए। चुनाव छात्र कल्याण परिषद के अधिष्ठाता प्रो. प्रदीप कुमार की देखरेख में संपन्न हुए।

केंद्रीय विवि में मौजूदा समय में 12 स्कूल चल रहे हैं। इसके तहत स्कूल ऑफ कामर्स एडं मैनेजमेंट स्टडीज से हितेश वर्मा, जैसमीन, साहिल मारकंडा, पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान स्कूल से ज्योति ठाकुर, भाषा स्कूल से दीपक शर्मा और लक्ष्मी रानी, जैविक स्कूल से आकाश राठौर, विनीता कौंडल, गणित, कंप्यूटर एवं सूचना विज्ञान स्कूल से रंजना कुमारी, कनु चैधरी, पर्यटन, यात्रा एवं आतिथ्य प्रबंधन स्कूल से अंशुल शर्मा और शिक्षा स्कूल से दीपिका को निर्विरोध चुना गया है। वहीं पत्रकारिता, जनसंचार एवं नव मीडिया स्कूल, समाज विज्ञान स्कूल और भौतिक एवं पदार्थ विज्ञान स्कूल में चुनाव हुए। इसमें पत्रकारिता, जनसंचार एवं नव मीडिया स्कूल से तन्मेय, समाज विज्ञान स्कूल से सौरभ जंबाल, अनीता देवी, टविंकल, अदिति वर्मा भौतिक एवं पदार्थ विज्ञान स्कूल से अंशुल कुमार और अनुराग राठौर निर्वाचित हुए।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने छात्र परिषद के सभी विजेता सदस्यों को बधाई दी और भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि विवि संचालन में छात्र परिषद की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रहती है। उम्मीद है कि छात्र परिषद और विश्वविद्यालय प्रशासन साथ मिलकर नए मुकाम हासिल करेंगे। नई ऊर्जा, नए जोश के साथ काम होगा।

वहीं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रदीप कुमार ने भी सभी विजेता और निर्विरोध चुने गए छात्र परिषद के सदस्यों को बधाई दी। संपूर्ण निर्वाचन प्रक्रिया शांतिपूर्ण ढंग से सफल हुई। विद्यार्थियों ने न केवल पूरी निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान अनुशासन बनाए रखा, बल्कि अपनी कक्षाओं में भी नियमित रूप से भी उपस्थित रहे। उन्होंने उम्मीद जताई कि भविष्य में छात्र परिषद विवि प्रशासन के साथ मिलकर काम करेगी और छात्रों को समस्याओं को सुलझाने के लिए अपनी जिम्मेवारी बखूबी निभाएगी। ■

Think India Law Summit 2021 Successfully Conducted

On November 27, 2021 Law Summit was held in Delhi at Conference Centre University of Delhi and the event was organised by Think India, Delhi. The event was attend by over 200 participants and over 300 participants registered for the same. The event started at 10:00 am and went on till 6:30 PM. There were 4 session stating with the first session which was "India@75 (Constitutional Reforms that completely transformed India)" the panellist for this session were Ms. Monika Arora (Senior Advocate, Supreme Court of India), Prof. NageshwarRao (Vice Chancellor of Indira Gandhi National Open University) and Mr. PrateekSuthar (National Convenor Think India). The second session was on the topic "Decolonization of Indian Legal System" and the panellist for this session were Mr. Sridhar Portaraju (AOR, Supreme Court) and Dr. Seema Singh (Assistant Professor, Campus Law Centre, DU). The third session was on the the topic "Legal way-out for dealing with bureaucratic regulations in Hindu Temples" and the panellist for this session were Mr. R. Venkantramani (Senior Advocate, Supreme Court of India) and Mr. RavindraRaizada (Senior Advocate, Supreme Court of India). The last session was on the topic "Afghanistan Issue" and the panellist for this session were Dr. Rajeev Nayan (Senior Research Associate, ManoharParikar Institute of Defence Studies and Analyses), Prof Dr. Sanjay Kr. Bhardwaj (Chairperson, Centre for South Asian Studies, JNU) and AdityaKashyap (National Co-Convenor Think India). The session was successfully conducted and it received a positive response from most of the participants. Think India aims tobring many such events. ■

Welcome UGC decision to extend submission deadline for research dissertations

Considering the demand of Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP) in students' interest owing to the challenging times of COVID-19, the decision of University Grants Commission (UGC) to give additional 6 months for dissertation submission to the final year research scholars is welcome. ABVP had submitted a memorandum to UGC in February demanding an extension of a year. UGC then had given an extension of 6 months. Before the end of the extended period, through the Vice Chancellors of all universities, ABVP had urged the UGC to give relief of additional 6 months to the students. As a result, UGC has taken a decision in the interest of students. UGC has extended the deadline for submission of dissertations to 30th June 2022.

National General Secretary of ABVP NidhiTripathi said, "The decision taken by UGC to extend the time limit is welcome and is a relief to the researchers. Students had to face a lot of difficulties in the challenging circumstances due to the Covid pandemic. Researchers across the country will get relief from this decision, and will get time to complete their research with good quality." ■

स्वाधीनता संग्राम के अमर बलिदानियों की गाथा को घर-घर पहुंचा रहे हैं अभाविप कार्यकर्ता, पंजाब के 20 हजार घरों में भेंट की गई भगत सिंह की तस्वीर

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, देशभर में कार्यक्रम, संगोष्ठी, कार्यशाला इत्यादि का आयोजन कर स्वतंत्रता संग्राम के अमर बलिदानियों की गाथा को घर-घर पहुंचाने का काम कर रही है वहीं अभाविप, पंजाब प्रांत के द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर युवाओं में देशभक्ति की ज्वार पैदा करने वाले अमर बलिदानी भगत सिंह की तस्वीर को घर-घर पहुंचा रही है। अभी तक 20 हजार घरों तक तस्वीर भेंट की जा चुकी है।

अभाविप, पंजाब प्रांत के मंत्री कुदरत जोत कौर ने बताया कि स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर देश भर में अनेक कार्यक्रम किये जा रहे हैं, इसी कड़ी में अभाविप पंजाब प्रांत द्वारा युवाओं के प्रेरणास्रोत अमर बलिदानी सरदार भगत सिंह की तस्वीर को घर-घर पहुंचाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने कहा कि 24 जिलों के 20 हजार घरों तक पहुंचकर भगत सिंह की तस्वीर को भेंट की गई और भगत सिंह के बारे में जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य देशभक्ति की ज्वार को पुनः जागृत करना है, पंजाब तो आरंभ से ही क्रांतिकारियों की उर्वर धरती रही है। श्री कौर की मानें अभाविप के इस अभियान को समाज का जबरदस्त समर्थन मिल रहा है, लोग अभाविप के इस पहल की सराहना कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि भगत सिंह की तस्वीर देख कर युवा तो युवा बुजुर्गों का भी चेहरा चमक उठता है, इस दौरान कई ऐसे बुजुर्ग मिले जिन्होंने देश की आजादी में भाग लिया था। अभाविप ऐसे ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी को भी इक्टठा कर रही है, इसके लिए अलग से कार्यकर्ता लगाये गये हैं। ■

गुजरातः स्वयंसिद्धा के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं छात्राएं

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, गुजरात के द्वारा प्रदेश के छात्राओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक की जा रही है। अभाविप ने इस अभियान का नाम स्वयंसिद्धा दिया है। बीते महीनें अभाविप गुजरात के द्वारा 'गौरवशाली गुजरात में महिलाओं' की भूमिका पर स्वयंसिद्धा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, कानून, सायबर सूरक्षा आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। स्वयंसिद्धा के माध्यम से अभाविप के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले महिलाओं को सम्मानित भी किया गया। अभाविप के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार स्वयंसिद्धा कार्यक्रम का आयोजन प्रदेश के 27 जिलों में किया गया जिसमें 5500 से अधिक छात्राओं की सहभागिता रही।

पाटन में आयोजित स्वयंसिद्धा कार्यक्रम में अपने संबोधन

में विधानसभा अध्यक्ष नीमाबेन आचार्य ने कहा अभाविप की यह पहल राज्य में महिलाओं को और अधिक सशक्त बनाएगी जो गुजरात के स्वर्णिम भविष्य के लिए सहायक सिद्ध होगी। पाटन के स्वयंसिद्ध कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष के अलावेराज्य कक्षा मंत्री किर्तिसिंह वाघेला, अभाविप गुजरात प्रांत उपाध्यक्ष डॉ. पारूलबेन मोदी, प्रांत उपाध्यक्ष डॉ. लक्ष्मण भाई भूतडीया, पाटण कॉलेज आचार्य किन्नाबेन एवं नर्सिंग कॉलेज आचार्य तेजलबेन उपस्थित थे। ■

छात्रशक्ति को संस्कार देने का केन्द्र है अभाविप – सुनील आंबेकर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद छात्रों को संस्कार देने का केन्द्र है। अभाविप पिछले 75 वर्षों से संगठनात्मक, रचनात्मक गतिविधियों से राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत छात्र शक्ति का निर्माण कर रहा है। विद्यार्थी परिषद देशभक्ति की मशाल को जलाए रखने के संकल्प का नाम है। विद्यार्थी आंदोलन का मतलब राजनीतिक लोगों के आसपास घूमना नहीं हो सकता। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अपनी अधिक से अधिक ऊर्जा को समाज के दर्द को दूर करने में लगाना चाहिए। राष्ट्र की सुरक्षा, राष्ट्र की उन्नति सर्वोपरि होनी चाहिए। युवाओं को अपनी सीमाओं से आगे निकलकर देश और समाज के हित के बारे में सोचना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश में कम्युनिस्ट व विशेष विचारधारा के लोग राष्ट्र के ही खिलाफ हैं।

आर्य नगर सूरजकुंड रोड पर पुराने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यालय के स्थान पर नया भवन बनाया गया है। नये भवन में हवन-पूजन का आयोजन किया गया। इसके बाद शाम को रा.

स्व. संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने अभाविप के नवीन छात्रशक्ति भवन का उदघाटन किया। इस दौरान उन्होंने अभाविप के कार्यों पर प्रकाश डाला।इस अवसर पर अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह, राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत, क्षेत्रीय संगठन मंत्री मनोज नीखरा, रा.स्व. संघ के क्षेत्र प्रचारक महेन्द्र, प्रांत प्रचारक अनिल कुमार, प्रदेश अध्यक्ष उत्तम कुमार, प्रांत संगठन मंत्री महेश राठौर, चौधरी चरण सिंह विवि के कुलपति प्रो. एके तनेजा विधायक सोमेन्द्र तोमर आदि उपस्थित थे ■

जींदः अभाविप ने सीआरएसयू कुलसचिव को सौंपा ज्ञापन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय ईकाई द्वारा लघु अवधि पाठ्यक्रम में दोबारा दाखिला शुरू करने की मांग को लेकर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. राजेश बंसल को ज्ञापन सौंपा।

विश्वविद्यालय अध्यक्ष अमित खैरी एवं नगर मंत्री अजय आर्य ने बताया कि विश्वविद्यालय में विभिन्न संकाय के तहत लघु अवधि के पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। इन पाठ्यक्रमों की अवधि तीन महीने से लेकर एक साल तक की है। इन पाठ्यक्रमों में अभी भी सीट रिक्त बची हुई हैं और बहुत सारे विद्यार्थी ऐसे हैं जो दाखिला लेने से वंचित रह चुके हैं और इन पाठ्यक्रमों में दाखिला लेना चाहते हैं। इन लघु अवधि पाठ्यक्रमों में एडमिशन प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद भी सभी वर्गों की सीट रिक्त बची हुई हैं और जो भी विद्यार्थी इनमें दाखिला लेना चाहता है उनके लिए या तो विश्वविद्यालय फिजिकल काउंसलिंग करें या एडमिशन पोर्टल पर दोबारा से दाखिला की प्रक्रिया शुरू करें। प्रांत कार्यकारिणी सदस्य परमिंदर एवं गौरव पिंडारा ने कहा कि विश्वविद्यालय जल्द से जल्द लंबित परीक्षा परिणाम को एक सप्ताह के तहत जारी करें और अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की रि-अपीयर की परीक्षा द्वारा आयोजित की जाएं। ■

अभाविप के हुंकार के बाद झूकी सरकार, मंडी में सरदार पटेल विश्वविद्यालय बनाने की दी मंजूरी

हिमाचल प्रदेश के मंडी में सरदार पटेल विश्वविद्यालय बनाने की मांग को लेकर बीते आठ दिसंबर को विशाल छात्र हुंकार रैली का आयोजन किया गया। छात्र हुंकार रैली में मंडी, कुल्लू और पालमपुर क्षेत्र के 4652 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। अभाविप के बढ़ते दबाव को देखते हुए हिमाचल प्रदेश सरकार ने मंडी में सरदार पटेल विश्वविद्यालय बनाने की मंजूरी दे दी। सरकार द्वारा सरदार पटेल विवि एक्ट का हिमाचल विधानसभा में पास कराने पर अभाविप ने स्वागत किया है। परिषद का कहना है कि प्रदेश सरकार का यह निर्णय हिमाचल प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए अभूतपूर्व सौगात साबित होगा।

अभाविप के प्रदेश मंत्री विशाल वर्मा ने में कहा कि दूसरा विवि खुलने से प्रदेश के उन हजारों विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा जो शिमला दूर होने की वजह से अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाते थे। यदि हम हिमाचल की भौगोलिक परिस्थितियों पर नजर दौड़ाएं तो हम देखते हैं कि शिमला हिमाचल के एक कोने में स्थित है और प्रदेश की भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार शिक्षा को सर्वस्पर्शी बनाने के लिए एक विश्वविद्यालय पर्याप्त नहीं है।

उन्होंने कहा कि परिषद द्वारा मंडी में प्रदेश विश्वविद्यालय बनाए जाने की मांग को लेकर पिछले दो वर्षों से चला अभियान शिक्षा को सस्ती, गुणवत्तापूर्ण व सर्वस्पर्शी बनाने के उद्देश्य से थी। सरकारी महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में अधिकतर वह विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं जो मध्यवर्गीय या निर्धन परिवारों से संबंध रखते हैं। प्रदेश में एक ही सरकारी विश्वविद्यालय होने की वजह से उन विद्यार्थियों को अपने छोटे-छोटे काम करवाने के लिए भी शिमला जाना पड़ता था। जिस कारण बहुत से निर्धन परिवारों के छात्रों को मानसिक और आर्थिक रूप से परेशानियों का सामना करना पड़ता था।

उन्होंने आगे कहा कि रूसा गाइडलाइन के तहत कोई एक विश्वविद्यालय के संबद्ध 100 से अधिक शिक्षण संस्थान नहीं होने चाहिए, परंतु अकेले हिमाचल प्रदेश

विश्वविद्यालय के संबद्ध 289 शिक्षण संस्थान चलने की वजह से विश्वविद्यालयों के ऊपर हर वर्ष लाखों विद्यार्थियों की प्रवेश, परीक्षा और परिणाम करवाने का अत्यधिक कार्यभार रहता है। इस वजह से प्रवेश, परीक्षा व परिणाम को लेकर अनेकों अनियमितताएं भी हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में देखने को मिलती हैं। प्रदेश विश्वविद्यालय में सीटें भी सीमित होने की वजह से बहुत सारे निर्धन परिवारों के विद्यार्थी उच्च स्तरीय शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते।

मंत्री विशाल वर्मा ने कहा कि अब सरदार पटेल विश्वविद्यालय प्रदेश का दूसरा विश्वविद्यालय बनने से लगभग छह जिलों के विद्यार्थियों को यह सुविधा अपने घर के नजदीक मुहैया हो सकेगी और हिमाचल प्रदेश की शिक्षा की समस्याएं भी दुरुस्त होंगी। उन्होंने कहा कि परिषद पिछले दो वर्षों से मंडी में प्रदेश का दूसरा विश्वविद्यालय खोले जाने की मांग को लेकर आंदोलनरत रहा। इसी कड़ी में 8 दिसंबर को मंडी में विद्यार्थी परिषद द्वारा इस मांग को लेकर छात्र हुंकार रैली का आयोजन भी किया गया था, जिसमें लगभग पांच हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया था।

उन्होंने प्रदेश सरकार से मांग उठाई कि जिस तरह से हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय को चलाने के लिए निर्धारित मानदंड, मानक, सुविधाएं व प्रावधान हैं उसी तरह से सरदार पटेल विश्वविद्यालय में भी सभी तरह के नियम लागू किया जाए तथा इस विश्वविद्यालय में आगामी सत्र से कक्षाएं भी सुचारू रूप से चलाई जाएं। ■

जयपुर : अभाविप द्वारा ऑनलाइन समान्य ज्ञान प्रतियोगिता में 11 हजार से अधिक छात्रों ने लिया भाग

अखिल भारती विद्यार्थी परिषद, जयपुर द्वारा स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर समान्य ज्ञान ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें गांव, ढाणी से लेकर शहर तक के 11567 विद्यार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा से पूर्व अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामना दी साथ ही उन्होंने स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पर स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान से छात्रों को परिचित करवाया। उन्होंने कहा कि लाखों देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दी तब जाकर हमें स्वाधीनता मिली। अथक संघर्ष से मिली स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर उन महापुरुषों के विचार, योगदान और बलिदान को याद कर देश के प्रगति में अपना योगदान करें, यही अमर बलिदानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ऑनलाइन प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए अभाविप जयपुर प्रांत के मंत्री हुश्यार सिंह मीणा ने कहा कि प्रतियोगिता के लिए 11 जिलों के कक्षा 9 से 12 तक के 11567 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन पंजीयन करवाया, जिसकी परीक्षा 12 दिसंबर को ली गई। अभाविप द्वारा आयोजित इस ऑनलाइन समान्य ज्ञान प्रतियोगिता में रिकार्ड छात्रों की भागीदारी परिषद के विचारों के प्रति लगाव को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन अभाविप से पहले किसी ने नहीं करवाई है। परीक्षा के बारे में बताते हुए श्री मीणा ने कहा कि इस प्रतियोगिता के प्रथम तीन (प्रथम, द्वितीय व तृतीय) स्थान प्राप्तकर्ता पुरस्कार के रूप में को क्रमशः 21000, 15000, व 11000 की राशि दी जायेगी एवं 50 प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया जाएगा। परीक्षा की समाप्ति के बाद सफल आयोजन के लिए छात्रों ने अभाविप के सभी कार्यकर्ताओं के प्रयास एवं सहयोग की सराहना की। छात्रों ने कहा कि इस परीक्षा में हमलोगों को बहुत कुछ जानने – समझने को मिला। ■

पीएफआई के लोगों ने छात्रों को जबरन पहनाए 'बाबरी' समर्थन बैज, अभाविप ने की दोषियों पर कार्रवाई की मांग

केरल में पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के लोगों की सांप्रदायिक गतिविधियां निरंतर जारी हैं। ऐसे ही एक घटनाक्रम में छः दिसंबर को पीएफआई के लोगों ने छात्रों को जबरन बाबरी मस्जिद के समर्थन में बैज पहनाए।

घटना केरल के पथानामथिट्टा जिले की है जहां पर सबरीमाला मंदिर मौजूद है। विवादित बाबरी मस्जिद ढांचा को 6 दिसंबर को गिराया गया था। इस पर विरोध दर्ज कराने की कोशिश में पीएफआई कार्यकर्ताओं ने जबरन हिंदू छात्रों को भी शामिल किया। पीएफआई के कार्यकर्ताओं ने जबरदस्ती हिंदू छात्रों को जिले के कोट्टंगल चंकप्पारा सेंट जॉर्ज स्कूल के बाहर छात्रों को घेरकर जबरन 'आई एम बाबरी' बैज पहनाए।

स्थानीय स्तर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने इस मुद्दे को उठाते हुए पथानामथिट्टा के पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखकर शिकायत दर्ज कराई है। परिषद ने कहा है कि इस घटनाक्रम में शामिल लोगों पर कार्रवाई होनी चाहिए।वर्तमान में सबरीमाला मंदिर तीर्थ यात्रा जारी है और ऐसे में इस तरह के प्रयास सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश मानी जा रहे हैं।

वहीं अभाविप का कहना है कि पीएफआई राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल रहा है। हर किसी को अपने राजनीतिक राय रखने का अधिकार है लेकिन अपना जहरीला राष्ट्रविरोधी मत छोटे बच्चों पर जबरन थोपना स्वीकार्य नहीं है। सोशल मीडिया वेबसाइट पर सोमवार को इस संबंध में दो ट्रेंड भी देखने को मिले। ■

बिहार के विश्वविद्यालयों में व्याप्त शैक्षणिक अराजकता एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभाविप की हुंकार

कुलपति जैसे सम्मानित पद वालों के यहां विजिलेंस छापे में करोड़ों मिलने व शैक्षिक उन्नयन के बजाय लुटेरे व्यापारी बन चुके शिक्षा जगत के कर्ताधर्ताओं के विरुद्ध बिहार के सभी राज्य विश्वविद्यालयों के छात्रों ने हुंकार भर दी है। विदित हो कि मगध विश्वविद्यालय के कुलपति के यहां विजिलेंस के पड़े छापों में करोड़ों रुपए एवं सोने जेवरात मिले जो यह स्पष्ट संकेत देता है कि शिक्षा का मंदिर अब पठन-पाठन के लिए नहीं रह गया है बल्कि लूट तंत्र का अड्डा बन गया है। जहां 3 साल के स्नातक की डिग्री 5 साल में मिल रही है तो वही पेंडिंग प्रमोटेड के नाम पर छात्रों से पैसे ऐंठने का एक तंत्र विकसित हो गया है। छात्रों को सुविधा देने के नाम पर जो आउटसोर्सिंग शुरू की गई अब वही सिरदर्द बन गई है साथ ही शिक्षा क्षेत्र के कर्ताधर्ताओं के लिए सोने के अंडे देने वाली मुर्गी बन गई है। सीनेट, सिंडिकेट की नियमित बैठकें किए बिना अनेक निर्णय लिए जा रहे हैं।

मगध विश्वविद्यालय के जिस माननीय कुलपति के घर से करोड़ों रूपए बरामद हुए, उनकी गिरफ्तारी तो दूर की बात है; उन्हें अबतक उनके पद से भी नहीं हटाया गया है। उत्तर पुस्तिका खरीद में गंभीर भ्रष्टाचार के आरोपी मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति पर कार्रवाई करने के बजाय आश्चर्यजनक रूप से उन्हें राजभवन में "सर्वश्रेष्ठ कुलपति पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है। बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति पर लोकायुक्त जांच का आदेश न्यायालय ने दिया है फिर भी ऐसे दागी कुलपति को भागलपुर विश्वविद्यालय का भी प्रभार सौंपा गया है।

बिहार के सभी 11 प्रमुख राज्य विश्वविद्यालयों में छात्रों ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में बड़ी संख्या में सहभाग कर भ्रष्ट तंत्र के विरुद्ध आवाज बुलंद की है। जहां एक तरफ बिहार के सभी नगरों में व्यापक प्रदर्शन हुए हैं तो वहीं दूसरी ओर सभी महाविद्यालयों में बड़े पैमाने पर छात्रों से संवाद स्थापित करते हुए अराजकता व भ्रष्टाचार के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान चलाया गया है। बिहार का प्रत्येक परिसर विद्यार्थी परिषद के पर्चा, पोस्टर, बैनर से पटा पड़ा हुआ है। बिगड़ती उच्च शिक्षा व्यवस्था के प्रति आम समाज में काफी रोष व्याप्त है।

बिहार के विश्वविद्यालयीन शिक्षा जगत में व्याप्त शैक्षिक अराजकता भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभाविप के नेतृत्व में छात्रों ने बिगुल फूंक दिया है जिसकी बड़ी शुरुआत 13 दिसंबर को बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर में 1400 से भी ज्यादा छात्रों के प्रदर्शन तथा ललित नारायण

मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा में 1000 से भी ज्यादा छात्रों के सहभाग वाले आंदोलन से हुई। जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बी.एन. मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा, पूर्णिया विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, भागलपुर विश्वविद्यालय, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा, मगध विश्वविद्यालय गया तथा मुंगेर विश्वविद्यालय सहित बिहार के सभी 11 प्रमुख राज्य विश्वविद्यालयों में छात्रों ने विद्यार्थी परिषद के नेतृत्व में बड़ी संख्या में सहभाग कर भ्रष्ट तंत्र के विरुद्ध आवाज बुलंद की है। संपूर्ण बिहार के राज्य विश्वविद्यालयों के छात्र भ्रष्ट व्यवस्था के विरुद्ध आंदोलनरत हैं तथा एबीवीपी सभी छात्रों की सशक्त आवाज बनकर आंदोलन का नेतृत्व कर रही है। ■

संस्कारों की विद्यापीठ है विद्यार्थी परिषद - नितिन गडकरी

लातूर (महाराष्ट्र) में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा यूथ लीडर समिट को संबोधित करते हुए केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि युवा देश की शक्ति है। देश को अगर आत्मनिर्भर बनाना है तो युवाओं को आगे आना होगा। विद्यार्थी परिषद अपने कार्यक्रमों, आंदोलन, अभ्यास वर्ष इत्यादि के माध्यम से युवाओं के अंदर नेतृत्व क्षमता का विकास कर रही है। मुझे गर्व है कि मैं विद्यार्थी परिषद का कार्यकर्ता रहा हूं, आज जो कुछ भी हूं उसमें विद्यार्थी परिषद और संघ का अमूल्य योगदान है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी परिषद संस्कारों की विद्यापीठ है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी महाराष्ट्र प्रांत के द्वारा लातूर के राजर्षि शाहू महाविद्यालय में स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर यूथ लीडर समिट का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी थे। समिट के प्रथम सत्र में अभाविप के क्षेत्रीय सह-संगठन मंत्री राय सिंह ने स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर परिषद द्वारा किये जा रहे प्रयास को रेखांकित किया। उन्होंने कहा

कि परिषद द्वारा स्वाधीनता संग्राम के गुमनाम नायकों के बलिदानी गाथा को समाज के बीच लाने के लिए सर्वेक्षण किया जा रहा है। वहीं दूसरे सत्र में लक्ष्मीकांत ने अपनी राय व्यक्त की और अभाविप के कार्यों की सराहना की। तीसरे सत्र के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी थे। राजर्षि शाहू महाविद्यालय के प्राचार्य ने भी छात्रों को संबोधित किया। इस अवसर पर प्रदेश मंत्री सिद्धेश्वर लटपटे, महानगर अध्यक्ष डॉ. शिवप्रसाद डोंगरे, मंत्री प्रसाद मुदगले, कार्यक्रम प्रमुख श्रेयस कुलकर्णी मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में लातूर के विभिन्न महाविद्यालयों के 750 से अधिक छात्रों ने सहभाग लिया। ■

Common entrance examination in central universities will give equal opportunity to students

On the initiative of UGC, universities should prepare for common admissions soon.

Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad welcomes the letter written by the University Grants Commission (UGC) to all the central universities for conducting common entrance examination.

ABVP was already demanding an entrance exam to provide equal opportunity to all the students in the admission process of the central universities. Last year also, ABVP had demanded a common entrance examination in central universities, but in some universities, it could not happen due to situation amid covid pandemic.

In the last few years, many students were denied admissions due to high cut offs in the enrollment process of Central Universities. By having an entrance exam, all the students of the country will get an equal opportunity. With this step, students coming from remote rural environment will also be able to complete their studies in reputed universities of the country on the basis of their talent.

ABVP's National General Secretary NidhiTripathi said "a centralized admission process is also discussed in the National Education Policy, which has been approved now. The entrance exam was to be held last year itself but it could not be done due to Covid pandemic. This step will make a significant contribution in the implementation of the National Education Policy, which is commendable." ■

सनातक संस्कृति की वाहक है जनजातीय परंपरा : प्रफुल्ल आकांत

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महानायक भगवान बिरसा मुंडा की जयंती यानी जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने देश भर में अनेक कार्यक्रम का आयोजन कर उनके कृतित्व को याद किया।जनजातीय गौरव दिवस की पूर्व संध्या पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत ने परिषद कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि धरती आबा जनजातीय समाज के गौरव हैं, उन्होने न केवल देश की स्वाधीनता के लिए लोगों को संगठित किया बल्कि सनातन संस्कृति की रक्षा और जनजातियों के उत्थान के लिए जीवनपर्यंत संघर्षरत रहे। 1891 में भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों के खिलाफ बिगुल फूंका और सतत संघर्ष किया। बिरसा मुंडा के योगदान का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है, समाज उन्हें अपना 'धरती आबा' यानी धरती का भगवान मानता है। षड़यंत्रपूर्वक जनजातियों को गैर सनातनी दिखाने का प्रयास किया जाता है जबकि जनजातीय समाज परंपरा सनातन संस्कृति के वाहक हैं। दंतेवाड़ा में स्थित मां दंतेश्वरी के पूजारी जनजाति हैं। भगवान जगन्नाथ के मंदिर के पूजा का दायित्व भी इसी समाज को है। जनजातीय समाज का हर पर्व प्रकृति और सनातन को समर्पित है।

भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली झारखंड में अभाविप ने प्रदेश भर में विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन कर धरती आबा को नमन किया एवं उनके कृतित्व को जन-जन तक ले जाने का संकल्प लिया। वहीं परिषद की हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय इकाई ने बिरसा मुंडा को याद करते हुए जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य पर संस्कृति कार्यक्रम उलगुलान का आयोजन किया। पुणे में भगवान बिरसा मुंडा जयंती पर जनजाति गौरव यात्रा का आयोजन किया गया, जो 27 नवंबर तक चला। जनजाति गौरव यात्रा का उद्घाटन पद्मश्री गिरीश जी प्रभुणे ने किया। उन्होंने कहा कि हमें जड़ों से जुड़े रहना चाहिए। जनजातीय लोग सीधे-सादे ईमानदार और शौर्यवान होते हैं।अगर कोई ईमानदारी का गलत फायदा उठाने की कोशिश करता है तो बिरसा मुंडा जैसे शौर्यवान भी होते हैं।

चित्तौड़ प्रान्त के बांसवाडा में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर 'गैर नृत्य प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। अभाविप मालवा प्रांत की रतलाम इकाई के कार्यकर्ताओं ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 100 फ़ीट की भव्य रंगोली बनाकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।अवध प्रांत के बहराइच में जनजाति गांव बलाईगांव में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। काशी प्रान्त में मछलीशहर जिला की मुंगराबादशाहपुर नगर में सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर अभाविप ओडिशा द्वारा भुवनेश्वर में प्रांत भर से आए हुए जनजाति विद्यार्थियों द्वारा शोभायात्रा निकाली गई। इस दौरान अभाविप के अखिल भारतीय जनजाति कार्य प्रमुख गोविंद नायक ने कहा किअंग्रेजों ने भारतीयों के साथ अत्याचार किया और अनेक षड्यंत्रों की सहायता से भारतीय वास्तविकता को खत्म करने की कोशिश की। ईसाई मिशनरियों का प्रयोग कर छोटा नागपुर में मुंडाओं को यह बता कर भटकाना शुरू कर दिया था कि अगर आप ईसाई बन जाओ तो जंगल और आपके अधिकारों को पूरा किया जाएगा। मुंडा ने आदिवासियों को वापस अपने मूल धर्म में परिवर्तित कर दिया। बालक बिरसा मुंडा ने अपने देवी-देवताओं, परम्परा पर आघात देख कर अंग्रेजों की खिलाफत के लिए आदिवासी सशक्त क्रांति उलगुलान की शुरुआत की। उन्होंने युवाओं को ऐसे सेनानियों को पढ़ने को कहा।

दक्षिण बंगाल प्रांत के पुरुलिया के बागमुंडी नगर इकाई द्वारा एक दिवसीय फुटबाल टूर्नामेंट और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जहां पर अपने संबोधन में अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री सप्तर्षि सरकार ने कहा, धरती आबा ने अंग्रेजों के खिलाफ बिगुल फूंका और सतत संघर्ष किया। ■

रायपुर : राज्य स्थापना दिवस पर राष्ट्रीय कला मंच द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

छत्तीसगढ़ के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आयाम राष्ट्रीय कला मंच द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। छत्तीसगढ़ अपनी वनांचल संस्कृतियों के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है। सुआ नृत्य, पंथी नृत्य , करमा, पंडवानी गायन रीना-सैला, ददरिया, बिहाव, फाग, यहां की पहचान है, कला मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम में राज्य के युवाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। राष्ट्रीय कला मंच के राष्ट्रीय संयोजक जे.पी. निरंजन के बताया कि राष्ट्रीय कला मंच प्रदेश भर से कलाकारों को एक मंच देने का कार्य कर रही हैं। कला मंच के माध्यम से यहां के युवा अपनी कला को निखार सकता है। कार्यक्रम का आयोजन तिल्दा जिले के नवापारा इकाई में किया गया था। इस अवसर पर कलाकारों ने रीना सैला नृत्य का भी प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ संगठन मंत्री प्रदीप मेहता,

रा. स्व. संघ के प्रांत सह कार्यवाह गोपाल यादव समेत सैंकड़ो उपस्थित थे। ■

नम आंखों से अभाविप कार्यकर्ताओं ने जनरल बिपिन रावत समेत अन्य सैनिकों को दी श्रद्धांजलि

आठ दिसंबर को दोपहर 12:30 बजे वायुसेना का MI-17V5 हेलीकॉप्टर तमिलनाडु के नीलगिरी जिले के कुन्नूर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। घटना के समय हेलीकॉप्टर में भारत के रक्षा प्रमुख जनरल बिपिन रावत, मधुलिका रावत तथा वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों के साथ 14 लोग उपस्थित थे। हादसे में 13 लोगों की मृत्यु की आधिकारिक पुष्टि की गई है। बाद में इलाजरत ग्रुप कैप्टन वरुण सिंह की भी मृत्यु हो गई। हादसे में गंभीर रूप से घायल होने के पश्चात जनरल बिपिन रावत का इलाज सेना अस्पताल में चल रहा था परंतु अंत में उनकी दुखद मृत्यु हो गयी। इस घटना पर शोक व्यक्त करते हुए अभाविप की राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी ने कहा कि वायुसेना के हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर विचलित करने वाली है। आज देश ने एक जांबाज सैनिक और आदर्श नागरिक खो दिया है। मृतक सैन्य अधिकारियों के परिजनों के साथ हमारी सांत्वना है तथा ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके परिवार को इस दुःख को सहने की असीम शक्ति प्रदान करे। अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो छगन भाई पटेल, राष्ट्रीय महामंत्री निधि त्रिपाठी एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने भी इस घटना पर अपना शोक व्यक्त किया एवं दिवंगत आत्माओं की शांति की कामना की।देश भर में अभाविप कार्यकर्ताओं ने श्रद्धाजंलि सभा का आयोजन किया और वीरगति प्राप्त हुए जनरल रावत समेत अन्य सैनिकों के प्रति नम आंखों से भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। ■

साहस एवं शौर्य के सूर्य को नमन

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 DECEMBER, 2021
DATE OF PUBLISHING: 8 DECEMBER, 2021

POSTAL REGD. NO.: DL(C)-11/1409/2020-2022
POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI

जनजातीय गौरव दिवस की झलकियां